कार्यवाही विवरण

मेसर्स फिल कोल बेनिफिकेशन प्राईवेट लिमिटेड, ग्राम–घुटकू, तहसील–तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) के Expansion of Coal Washery From 2.5 MTPA to 5.0 MTPA (Heavy Media Wet Type) in existing area of 9.93 Ha. के पर्यावरणीय स्वीकृति बाबत् दिनांक 20.04.2022 को दोपहर 12:00 बजे ग्राम–घुटकू स्थित हायर सेकेण्डरी स्कूल प्रांगण, तहसील–तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में आयोजित लोकसुनवाई का कार्यवाही विवरण :–

भारत शासन पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली की ई.आई.ए. नोटिफिकेशन 14.09.2006 के प्रावधानों के अनुसार मेसर्स फिल कोल बेनिफिकेशन प्राईवेट लिमिटेड, ग्राम–घुटकू, तहसील–तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) के Expansion of Coal Washery From 2.5 MTPA to 5.0 MTPA (Heavy Media Wet Type) in existing area of 9.93 Ha. के पर्यावरणीय स्वीकृति के संबंध में लोक सुनवाई हेतु उद्योग के आवेदन के परिप्रेक्ष्य में स्थानीय समाचार पत्र दैनिक भास्कर, बिलासपुर में दिनांक 17.03.2022 तथा राष्ट्रीय समाचार पत्र पायनियर, नई दिल्ली के मुख्य संस्करण में दिनांक 17.03.2022 को लोक सुनवाई संबंधी सूचना प्रकाशित करवाई गई थी। तद्नुसार लोक सुनवाई दिनांक 20.04.2022 को दोपहर 12:00 बजे ग्राम–घुटकू स्थित हायर सेकेण्डरी स्कूल प्रांगण, तहसील–तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में आयोजित की गई। ई.आई.ए. अधिसूचना 14.09.2006 (यथा संशोधित) के प्रावधानों के अनुसार ड्राफ्ट ई.आई.ए. रिपोर्ट, कार्यपालक सार की प्रति (हिन्दी व अंग्रेजी) एवं इसकी सी.डी. (साफ्ट कापी) जन सामान्य के अवलोकन/पठन हेतु कार्यालय कलेक्टर बिलासपुर, कार्यालय मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत बिलासपुर, अनुविभागीय अधिकारी (रा0), कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) तखतपुर, जिला–बिलासपुर, कार्यालय महाप्रबंधक, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र बिलासपुर, क्षेत्रीय कार्यालय, क्षेत्रीय अधिकारी, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, व्यापार विहार पं. दीनदयाल उपाध्याय पार्क के पास, बिलासपुर, **सरपंच/सचिव कार्यालय, ग्राम पंचायत घुटकू, तहसील–तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.),** डायरेक्टर, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, मंत्रालय, भारत सरकार, इंदिरा पर्यावरण भवन, वायु विंग, जोरबाग रोड़, नई दिल्ली, मुख्य वन संरक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय (पश्चिम मध्य क्षेत्र), पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भू–तल, पूर्व विंग, नया सचिवालय भवन, सिविल लाईन्स, नागपुर (महाराष्ट्र) एवं मुख्यालय, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, पर्यावास भवन, नॉर्थ ब्लॉक, सेक्टर – 19, नवा रायपुर अटल नगर, रायपुर

(छ.ग.) में रखी गई है। परियोजना के संबंध में सुझाव, विचार, टीका–टिप्पणियां एवं आपत्तियां सूचना प्रकाशन जारी होने के दिनांक से 30 दिन के अंदर क्षेत्रीय कार्यालय, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, बिलासपुर में मौखिक अथवा लिखित रूप से कार्यालयीन समय में प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया गया। इस दौरान लोक सुनवाई के संबंध में सुझाव, विचार, टीका–टिप्पणियां/आपत्तियों के संबंध में इस कार्यालय को पांच आवेदन पत्र प्राप्त हुआ है।

लोक सुनवाई हेतु निर्धारित तिथि दिनांक 20.04.2022 को दोपहर 12:00 बजे ग्राम–घुटकू स्थित हायर सेकेण्डरी स्कूल प्रांगण, तहसील–तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) में आयोजित की गई। लोक सुनवाई की कार्यवाही आरंभ की गई।

सर्वप्रथम श्रीमती जयश्री जैन, अतिरिक्त कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा लोक सुनवाई की कार्यवाही आरंभ करने की अनुमति के साथ डॉ. एम. पी मिश्र, क्षेत्रीय अधिकारी, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, बिलासपुर द्वारा भारत शासन, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा जारी ई.आई.ए. नोटिफिकेशन 14. 09.2006 (यथा संशोधित) के परिपेक्ष्य में लोक सुनवाई के महत्व एवं प्रक्रिया के संबंध में विस्तृत जानकारी जनसामान्य को दी गई।

तत्पश्चात् परियोजना प्रस्तावक की ओर से श्री राजेश ठाकुर (कंपनी प्रतिनिधि), श्री महेश्वर रेड्डी, पायनियर एनवायरो लेबोरेटरीज एंड कंसलटेंट प्राईवेट लिमिटेड, हैदराबाद द्वारा मेसर्स फिल कोल बेनिफिकेशन प्राईवेट लिमिटेड, ग्राम–घुटकू, तहसील–तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) परियोजना के संबंध में संक्षिप्त जानकारी जनसामान्य को अवगत कराया गया।

अतिरिक्त कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा उपस्थित जनसमुदाय को जनसुनवाई संबंधी विषय पर अपने सुझाव, आपत्ति, विचार, टीका–टिप्पणी मौखिक अथवा लिखित रूप से प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया गया।

तत्पश्चात् उपस्थित लोगों ने मौखिक रूप से सुझाव, विचार, टीका–टिप्पणियां दर्ज कराया गया। जिसका विवरण निम्नानुसार है :–

1. **<u>श्री विसम्भर गुलहरे, ग्राम–घुटकू, अध्यक्ष, जनता कांग्रेस जोगी, बिलासपुर</u>** :– जनसुनवाई के इस कार्यक्रम में सभी लोगों की भागीदारी होती है और सब जनप्रतिनिधियों की। कल भी यहां पर जनसुनवाई का कार्यक्रम रखा गया था।

मैंने अपने संबोधन में बातें रखे थे। जो छूट गया है आज आपके समक्ष रखने वाला हूं। आज का एजेंडा में परियोजना प्रस्तावक ने बहुत ही विस्तार से अपने योजना के बारे में बताया। अच्छा लगा सबको। लगता तो ठीक है जैसा उन्होंने पढ़ा। यदि वास्तविक धरातल रूप में आ जाये इससे अच्छी बात हो नहीं सकती। जो हम विरोध करते है, समर्थन करते है, उसकी सारी बाते समाहित है और मुझे नहीं लगता है कि ये सब लागू कर देगें। कोई भी नागरिक, कोई भी शहरी उनका विरोध करेगा। आज का यह जन सुनवाई विस्तार के लिए है। पहले से इसका परियोजना यहां पर चल रहा है। उनका विस्तार हो रहा है, प्रस्तावित है। आज इसलिए यहां जन सुनवाई चल रही है। मैं पहले भी कहता था, अभी भी कह रहा हूं किसी भी उद्योग धंधे को चालू करने से वहां के निवासियों का जीवन स्तर उठता है। स्टेण्डर्ड होता है वे लोग भी गरीबी रेखा से उपर उठने का मौका मिलता है। हमें वह मौका को हाथ से जाने नहीं देना चाहिए। हम आवेश में आकर, किसी के कहने में आकर या अपनी भावनाओं से ऐसा लगता है कि बहुत बड़ी क्षति होने वाले है। ऐसा लगता है कि हमारे साथ अन्याय होने वाला है। ऐसा लगता है हमारे अधिकारों का कुठाराघात होने वाला है। ये सब सुनकर हमारे भाई, हमारे साथी, हमारे बहनें जो आयी है उनके मन में भी बात है कि ये कोल वॉशरी का विस्तार हो रहा है इसमें कुछ ज्यादा उनके लिए क्या है। जैसा मैं भी सुन रहा था। इसमें बहुत कुछ है, और ऐसा कुछ नहीं लगता कि वे नहीं करेंगे। जिसका मुझे साफ कारण पता चल रहा है। यदि वो धोखाधड़ी करना चाहते, यदि आप लोगों का छल–कपट करना चाहते तो इसी घुटकू में अपनी दूसरी प्रोजेक्ट नहीं लाते। क्योंकि इसी में अपना करते और अपना निकल लेते। फिल कोल स्थापित हो जाये आप लोगों के बीच में रहना है। इसलिए वे आप लोगों के साथ कभी धोखाधड़ी, वादा–खिलाफी नहीं करेंगे। वादा–खिलाफी करने वाले का चेहरा अलग होता है और काम करने वाले का चेहरा अलग होता है। बहनों आप लोगों से निवेदन करता हूं कि आने वाले समय में आपका ये निरतू, घुटकू बहुत बड़ा इण्डस्ट्रीयल स्टेट बनेगा, बहुत बड़ा इण्डस्ट्रीयल एरिया बनेगा, हब बनेगा। एक शुरूवात होती है उसके बाद वहां से लाईन लग जाती है। आप लोगों को खुश होना चाहिए और आप लोगों को इस बात पर धन्यवाद देना चाहिए कि हमारे क्षेत्र में यह उद्योग खुल रहा है। ताकि आप लोगों का यहां पर विकास हो सके। इसी आशा और विश्वास के साथ कल हमारे नौजवान साथी मुझे बताया कि गुलहरे जी आप बिल्कुल ठीक बोलते हैं क्योंकि कल मैंने बताया था कि मैं खुद बहुत बड़ा विरोधी था, एनटीपीसी का विरोध मैं खुद करता था, आज उसी एनटीपीसी को चलते देखता हूं, विकास देखता हूं तो मुझे लगता है

कि मैं उनके लिए अन्याय कर रहा था। कल मैं निकला तो साथी बोले रहे थे कि आपने बहुत सही बात कही, बहुत से लोग जाते है। उनको गांव से बहुत प्यार रहता है। आज भी है और आगे भी रहेगा। चाहते है कि उनका वातावरण, स्वस्थ रहे, दूषित नहीं हो, तो साथियों मुझे ऐसा नहीं लगता क्योंकि मैं चले आ रहा था तो आपके गांव में मुझे हरियाली दिख रही थी। निरतू, लोखंड़ी वाला आगे भी ऐसा नहीं लगा कि फसल चौपट हो रही है, रोड खराब है, तालाब खराब है, पानी पीने लायक नहीं है। ऐसी कोई बात नहीं है तो फिर आपत्ति किस बात की है। यहां से आपको कुछ मिलना ही मिलना है। खोना इसलिए कुछ नहीं है कि क्योंकि यहां पर आप लोगों को बताया जा रहा है कि ये हो जायेगा, नुकसान होगा, पर्यावरण दूषित होगा। पर्यावरण दूषित होता तो पर्यावरण के क्षेत्रीय अधिकारी, राज्य के अधिकारी, केन्द्र के अधिकारी, सारे लोग इसी की चिंता के लिए तो कार्यालय खोला है। ये लोग चाहेंगे क्या यहां के वातावरण, यहां के पर्यावरण खराब हो। क्या इनको, ऊपर जवाब नहीं देना है, इनको भी जवाब देना है। ऐसा नहीं है कि किसी के कहने से ये लोग ड्यूटी कर रहे है। शासन का मनसा पर्यावरण को संरक्षण करना इनका दायित्व भी है। क्योंकि नागरिक भी है, अधिकारी भी है, और इस देश के इस राज्य के और इस क्षेत्र के निवासी भी है। साथियों आप लोगों से करबद्ध निवेदन है कि लोग अपनी जगह है। जहां पर ये लोग वादा–खिलाफी करेंगे तो आज जो आपके हाथ में समर्थन के चिट्ठी है, समर्थन की तख्ती है कल यहां पर मै भी आपके साथ विरोध की तख्ती लेकर खडा रहूंगा और बीच बस्ती में मैं रहूंगा आगे। जो कुछ हुआ सबसे पहले मैं सामना करूंगा। परंतु यदि कोई अच्छा काम होता है, तो उसके लिए आप लोगों से करबद्ध निवेदन है कि तो उसका विरोध कभी न करें। कई लोग कहते है जो सच को झूठ बोलना चाहते है। सच को सच रहने दीजिए। झूठ तो अपने आप में झूठा रहता ही है। कल मैं जो युवा साथियों में देख रहा था आज भी उन लागों में देख रहा हूं उनकी आंखों में चमक है। कल आगे से रोक रहे थे जब मैं निकला तो स्वागत किये। बोले गुलहरे भईया बहुत बढ़िया बोले। कुछ लोग बरगला दिये थे। मैं बोला नही साथियों मैं भी तुम्हारे जैसा उम्र का था तो मैं तुम लोगों से ज्यादा विद्रोही था और तुमसे ज्यादा विरोध करता था। समय के साथ देखना पड़ता है। लेकिन विरोध होगा तो विसंभर गुलहरे के घर और बिलासपुर ज्यादा दूर नहीं है। लिंक रोड चले आइयेगा, राजेन्द्र नगर में। सबसे पहले यदि मैं नहीं रहूंगा तो जो सजा देना चाहे ले लीजिएगा। परंतु मुझे मालूम है ये वादा–खिलाफी नहीं करेंगे। और मैं बता भी दिया हूं संचालक को यदि आपने वादा–खिलाफी किया, आज तो मैं समर्थन का चिट्ठी दे रहा हूं कल आपके

सामने भूख हड़ताल, आंदोलन करूंगा और उग्र आंदोलन की आपकी जवाबदारी होगी। उन्होंने कहां, नहीं भईया हम नियम से चलेगें। नियम के खिलाफ, जाना ही नहीं है, और भी प्रोजेक्ट डालना है। मेरे को उसके बातों में सच्चाई नजर आई। मैं समर्थन करता हूॅ। इसका विस्तार होना चाहिए और नियमों के तहत् होना चाहिए और नियम का पालन होना चाहिए। नियम का ढील–ढाल किया तो विरोध का सामना करना पड़ेगा। इसी आशा के साथ समर्थन करता हूं।

2. **श्री श्याम सोनी, ग्राम–घुटकू** :– मैं प्लांट में एक कर्मचारी हूॅ। विगत 6 वर्षो से मैं इस प्लांट का कर्मचारी हूं। मैं एक चीज बताना चाहता हूं। आज तक 6 साल में, मुझको भैया जी, मेरा नाम लेकर नहीं पुकारे। जब भी काम आता है तो भैया जी बोलते है कि सोनी जी, ये–ये काम कर लेना। ये महानता बता रहा हूं। ये मेरे साथ नहीं है। सभी कर्मचारियों के साथ सलीका है। कुछ भी गड़बड़ हो जाता है कुछ बात हो जाती है फिर भी गुस्सा नहीं करते। किसी का अपशब्द नहीं बोलते है। न ही किसी को डाटते हैं। पर्यावरण के संबंध में बार–बार कहते हैं कि आप वृक्षारोपण में ध्यान दो, साफ–सफाई को पहले ध्यान दो। ये काम पहले करो, जो भी काम है ओ काम करों आने वाले समय में यही निवेदन है। 4 ग्राम पंचायत अपने क्षेत्र में आता है। लोखंडी ग्राम पंचायत है, निरतू ग्राम पंचायत है, तुर्काडीह ग्राम पंचायत है एवं घुटकू ग्राम पंचायत है। मैं डॉयरेक्टर से निवेदन करना चाहता हूं कि बेरोजगारी को ध्यान देते हुए स्थानीय लोगों को नौकरी देने में प्राथमिकता देंगे। घुटकू का हो, चाहे निरतू का हो, लोखण्डी का हो या तुर्काडीह का हो। सबसे खास बात यह है कि करहीपारा के कोई निवासी है, उनको, भईया जी से निवेदन है कि गांव को गोद ले और विकास पर ध्यान दें।

3. **श्री कुंवर सिंह पारकर, ग्राम–करहीपारा** :– जो बेरोजगार लड़के हैं आस–पास के क्षेत्र में जैसे निरतू है, तुर्काडीह है, लोखड़ी है। बहुत सारे गांव हैं जो 10 कि.मी. के अंतर्गत आते हैं। सभी को रोजगार दिया जाये और अच्छे से अच्छे रोड बनाया जाये, पेंड़–पौधे लगाये जायें, पर्यावरण दूषित न हो, ध्यान दिया जाये। मैं इसका समर्थन करता हूं। मैं चाहता हूं कि एक प्लांट क्या कम से कम 10 प्लांट लगना चाहिए। जितना भी प्लांट लगेगा तो हमारे युवाओं को रोजगार मिलेगा। मैं इतना कहकर समर्थन करता हूं।

4. **श्री कमल माथुर, ग्राम–निरतू (करहीपारा)** :– कोल फिल खुलना चाहिए। लोगों को रोजगार मिलना चाहिए। मेरे वहीं से लगा हुआ जमीन है फिल पे। तो भी

मुझे तकलीफ नहीं है। समर्थन देते हैं कि फिल कोल खुलना चाहिए। लोगों को रोजगार मिलना चाहिए। छोटा–छोटा किसान है हमारे गांव में सबको बनी चाहिए। इसलिए मैं समर्थन देता हूँ कोल फिल खुलना चाहिए। एक बात है, भईया, मरनी में भी पैसा देता है, शादी में भी पैसा देता है। पांच–सात हमारे गांव में बोर खोदवाया है। हमारे गांव में सीसी रोड बनाने का भी चल रहा है। मैं समर्थन करता हूं। कोल फिल खुलना चाहिए।

5. **श्रीमती सहोद्रा, ग्राम–निरतू (करहीपारा)** :– प्लांट म रोजगार मिलना चाहिए। मैं समर्थन करथव।

6. **श्री भागवत मधुकर, ग्राम–करहीपारा** :– प्लांट खुलने से हमारे आस–पास के ग्राम पंचायत के नवयुवकों को रोजगार मिल जाये। प्लांट खुलना चाहिए। एक क्या 10 प्लांट खुलना चाहिए। हर घर में बेरोजगार है। प्लांट खुलना चाहिए मेरा पूरा–पूरा सहयोग है।

7. **श्रीमति संतोषी, ग्राम–घुटकू** :– काम मिलना चाहिए। समर्थन है।

8. **श्री चोला राम, ग्राम–तुर्काडीह** :–प्लांट खुलना चाहिए। हमारा गांव तरक्की में रहे।

9. **श्रीमती शैल, ग्राम–करहीपारी** :– काम चाहिए। कोयला डिपो चाहिए।

10. **श्रीमती सैनी बाई, ग्राम–करहीपारा** :– काम चाहिए। हमको कोयला डिपो चाहिए।

11. **श्री उत्तरा माथुर, ग्राम–तुर्काडीह** :– बच्चें लोगों को नौकरी दिया जाय। हमारा जमीन है। कोई समस्या नहीं है, बढिया साफ है। हर चीज में भैया सहयोग दे रहे हैं। हमारे पारा के पूरा महिला लोग काम में जाते है। कोई तकलीफ नहीं है।

12. **श्री विनय गढ़ेवाल, ग्राम–लोखण्डी, आम आदमी पार्टी कार्यकर्ता, तखतपुर विधानसभा क्षेत्र,** :– रोज एक्सीडेंट, सारा चीज वहां हो रहा है, फसल बर्बाद हो रही है, और यह जानते हुए भी हम अगर यहां कोल वॉशरी चाहते हैं तो दुर्भाग्य की बात है। उसके साथ–साथ मैं यह कहना चाहूंगा कि गांव वासियों को किसी भी प्रकार के ईआईए रिपोर्ट जो जानकारी दिया जाता है, जल प्रभावी आंकलन के

बारे में जानकारी बताया जाता है वह जानकारी ग्राम वासियों को नहीं दिया गया है। अधिकारी महोदय से विनम्र प्रार्थना है कि आज का ये जन सुनवाई टाला जाये। ईआई रिपोर्ट के नियम के अनुसार से गांव वालों को सुनाई जाती है। सभी प्रकार के पॉम्पलेट, बैनर और सभी माध्यमों से। लेकिन यह नहीं हुआ है। ग्राम पंचायतों में भी यह जानकारी नहीं दी गई है और जिन भाई बंधुओं को जानकारी नहीं है वो पुनः प्रयास करें कि कोल वॉशरी नहीं खुलने चाहिए। कोल वॉशरी नहीं खुलने चाहिए। पुरजोर विरोध है। जो क्षेत्र से प्रभावित हैं, यहां के व्यवस्थाओं से प्रभावित हैं, गंदी राजनीति से प्रभावित है, वो जनसुनवाई के विरोध में हैं, कोल वॉशरी के विरोध में है।

13. **कु. सुनिता सूर्यवंशी, ग्राम–पेण्ड्रीपारा** :– कोल फेक्टरी खुलना चाहिए। गरीब लोग को काम देना चाहिए।

14. **श्री नरोत्तम प्रसाद पटेल, ग्राम–निरतू** :– जिस जगह कोल डिपो संचालित हो रहा है 2.5 एमटीपीए का उस जगह विस्तार 5 एमटीपीए का होने से दो गुना लोगों को रोजगार मिलेगा। साथ ही जिस भूमि पर विस्तार किया जा रहा है हमारे ग्राम निरतू के मालगुजार भूतपूर्व जो भी परिवार का है। जिस जगह पर खारा पानी है। वहां उन्होने सेन्ट्रल बैंक से आठ लाख लोन ले करके बोर कराया एवं एक ट्रेक्टर लिया था। लेकिन दो सालों में एक भी किस्त नहीं पटा पाया था। गेहूँ बोने से भी गेहूँ का पौधा सूख जाता था। धान भी नहीं होता था खारा पानी के वजह से। उसका बोर भी पूरा सड़ गया था। फिर उसको मजबूरी में बेच करके उन्होनें कर्ज छूटा है। तब जाकर मुक्ति हुआ है और जितना भी जमीन है उनके वह भी बिक जाती। मैं इसके समर्थन में हूँ। कोल डिपो खुले। लोगों को रोजगार मिले। प्रवीण झा भईया को समस्या हम लोग बतायें कि करहीपारा एरिया में पानी की भीषण कमी है लोग दूर दराज से लेकर पीने के लिए जाते है वहां पर ट्यूबवेल खनन करके पंप लगाया है। मैं उनको धन्यवाद देता हूँ, इसी प्रकार सामाजिक कार्य से जुड़ा रहे। लोगों को रोजगार मिलता रहे।

15. **श्री सुखनंदन प्रसाद लोनिया, ग्राम–करहीपारा** :– दो–तीन–दिन से लडाई चल रहा है। लड़ाई चल रहा है तो जनता किस–लिए लड़ रहे हैं। जनता को समझना चाहिए। भाई हम जमीन देते हैं तो अपने ही जमीन में बना रहे हैं, कोल वॉशरी हमारे जमीन में नहीं बना रहा है। अपना जमीन में बना रहा है हमको कोई प्रकार का विघ्नबाधा नहीं डालना है। समर्थन है भाई।

16. **श्रीमती उमा पारकर, ग्राम– करहीपारा** :– कोयला डिपो को बनने में मेरा समर्थन है।

17. **श्री मोहित दिनकर, ग्राम–उसलापुर** :– प्लांट खुलना चाहिए। मैं समर्थन करता हूॅ

18. **श्री प्रकाश टंडन, ग्राम–करहीपारा** :– मेरा समर्थन है।

19. **श्री अयोध्या प्रसाद साहू, ग्राम–शक्तिपारा, पो.–घुटकू** :– जब तक के कोई भी उद्योग का विस्तार नहीं होगा। तो हमारा विकास संभव नहीं है। इसलिए कोई भी उद्योग का विस्तार हो रहा है। उसका विरोध हम लोगों को सोच समझकर करना चाहिए। इसलिए मैं चाहता हूं कि हमको विरोध न करके, हमको जो है, समर्थन करना चाहिए। क्योंकि उद्योग का विस्तार होगा तो हमारे आस–पास के जितने भी क्षेत्रावासी बेरोजगार युवक हैं उनको भी रोजगार का अवसर प्राप्त होगा। ये मांग रखना चाहिए प्रबंधक से, भाई हम आपके आश्रित हैं। बेरोजगार युवक हैं। आश्रित मोहल्ला–गांव है। उनके प्रति आप जो ध्यान आकर्षण करेंगे और जहां तक के अभी तक के ये सुनने में नहीं आया है कि जो प्रबंधन महोदय के तरफ से किसी भी प्रकार की जो है अनसुनी करे हैं ऐसा सुनने में नहीं आया है। इसलिए मैं पूरजोर, जो है, इस कार्य का समर्थन करता हूं।

20. **श्री विश्वनाथ पटेल, ग्राम–लोखण्डी** :– हमारे केन्द्र सरकार हो, राज्य सरकार हो एक ओर जमीन को भुला करके अपने देश प्रदेश में उद्योग स्थापित करने के लिए आमंत्रण देते हैं। उससे क्या होता है विकास के साथ–साथ कहने का मतलब है, कि हमारे यहां जैसा कि उद्योग लग रहा है, लग रहा है तो शासन का दिशा–निर्देश का परिपालन करते हुए किया जाये, तो आपत्ति नहीं होना चाहिए। रही सवाल हमारे गांव के लोग, परिवार का पालन पोषण कर रहे हैं। हमारे गांव में उज्जवला योजना के तहत पर्याप्त मात्रा में सिलेंडर का वितरण किया गया है तो हमारे गांव में मैं देखता हूं अधिकांश महिलाएं अपने सिलेंडर को किनारे करके उसी कोयला को जलाकर भोजन बनाती हैं। कहने का मतलब ये है कि किसी भी प्रकार का शासन नियम बनाये हैं उसी के तहत् संचालन किया जाये। कोई आपत्ति नहीं है। समर्थन करता हूं।

21. **श्री सूरज यादव, पंच, ग्राम पंचयत निरतू (करहीपारा)** :– आज हमारे गांव में, जो उद्योग का विस्तार हो रहा है। पूर्व में कोल वॉशरी यहां था। स्थानीय लोगों को रोजगार, जो नवयुवक है उनको रोजगार दिया जा रहा है। हमारे जो, ये कोल वॉशरी के प्रवीण झा जी हैं उनका विशेष करके गांव, विगत दो साल से चुनाव के बाद देखा हूं, हमारे करहीपारा में, निरतू में, उनके द्वारा निर्धन परिवार को विशेष रूप से सहयोग दिया जाता है, और जो भी छोटे समस्याएं है गांव में रोड, नाली, उनके द्वारा किया जाता है, और जैसे कि खेलकूद भी में इस क्षेत्र के बच्चे जाते है, उनके लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। आर्थिक रूप से सहयोग दिया जाता है। और मैं चाहता हूं ऐसे उद्योग को और साथ ही मैं निवेदन करना चाहूंगा, झा जी से के कुछ किसानें हैं जिनकी फसलें नुकसान होते हैं उनके लिए विचार करते हुए समय–समय में उनसे मिला जाये और उद्योग का इस क्षेत्र के ग्रामीण जन फायदा लें। विशेष रूप से जो नवयुवक साथी वो वहां काम करें। पूर्व से आज 30–40 परसेंट गांव के बच्चें वहां काम कर रहे हैं। मैं इस प्लांट का विस्तार का समर्थन करता हूँ।

22. **श्रीमती शैल खरे, ग्राम–नीरतू (करहीपारा)** :– समर्थन है। कोल डिपो खुलना चाहिए। रोजगार चलना चाहिए।

23. **श्री अशोक कुमार श्रीवास, ग्राम–घुटकू** :– मोर कहे के मतलब ये कोल वॉशरी खुले हे, ठीक हे। रोजगार के व्यवस्था होना चाहिए।

24. **श्री मनोज कुमार पटेल, ग्राम–निरतू** :– मैं किसी प्रकार का उद्योग खुलने का विरोध नहीं करता, लेकिन उद्योग वहां खुलना चाहिए जहां से आबादी एरिया बहुत दूर हो। जहां पर मानव साधन और पर्यावरण को नुकसान न हो, वहां उद्योग खुलना चाहिए। उद्योग खुलने का कतई विरोध नहीं करता। लेकिन पर्यावरण सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, घनी आबादी से निश्चित दूरी पर उद्योग खुलना चाहिए। जैसे कि मेरे आदरणीय नरोत्तम भईया ने कहा कि वहां पर कोई फसल नहीं हो रहे हैं तो घुटकू सहकारी सोसाइटी में आ करके तत्काल चेक कर सकते हैं। वहां पर हर साल कितने क्वींटलों में धान बिक रहा है वो सबूत के तौर पर दिख जायेगा। वहां पर अभी भी फसल 25 से 30 क्वींटल पर एकड़ उत्पादन आ रहा है धान का। वहां पर किसी भी प्रकार का भूमि बंजर नहीं है, वहां आस–पास के सभी भूमि बढ़िया उपजाऊ है और अभी जितने एरिया में कोल वॉशरी लगा है उतने एरिया का डस्ट बहुत ज्यादा मात्रा, दूर–दूर तक फैलता है,

निपटारा का समुचित साधन नहीं अपनाया गया है। विस्तार होगा कितना उसका प्रभाव पड़ेगा ये आप सभी को मालूम है। मैं शासन प्रशासन को अवगत कराना चाहता हूं कि मेरे जितने माताएं, बहनें आयी हुई हैं, वे कुछ लोगों के प्रलोभन पर आयी हुई हैं। जिसे थोड़ा ध्यान दिया जाये। अपने मत का उपयोग करते हुए अपने हिसाब से समर्थन या विरोध करें। मेरा कहना यह है कि प्लांट खुलने से पहले क्या कोल वॉशरी के विस्तार से उससे होने वले प्रदूषण का समुचित समाधान किया जाये और जितने भी डस्ट उडते है या वृक्षारोपण का जो प्लान है उसे भी हेल्प नहीं लिया गया है। उन सब का निपटारा किया जाये। उसके बाद प्लांट का विस्तार या नया स्टील प्लांट खोला जाये।

25. **श्री हीरालाल पटेल, ग्राम–लोखण्डी** :– मेरा खेत कोल वॉशरी के रोड किनारे उसी के सामने है। मेरा कोई समाधान नहीं हो रहा है। धूल ही धूल है। कोई सब्जी नहीं उग रहा है। कोई अधिकारी जाके देखता भी नहीं है। विश्वास नहीं होता है तो चलो अधिकारी को लेकर खेत में ले जाउंगा और दिखाउंगा। क्या होता क्या नहीं होता है। हमारे समस्या का काई निराकरण नहीं हो रहा है। हमारा बिजली खंभा भी टूटा हुआ है। डबल रोड बना दिया गया है। क्या कमाऐंगे खाऐंगे। वहां नहर है। रोड बना दिया गया है।

26. **श्री सत्य प्रकाश गढ़ेवाल, ग्राम–लोखण्डी** :– मैं प्लांट के संचालक उद्योगपति से यह पूछना चाहता हूं कि आपके पास रोड नहीं है। आप किसानों को धोखा दे रहे हो। उनकी जमीन से अपनी कोयला वाली गाड़ी ले जा रहे हो और हमारे फसल को बर्बाद कर रहे हो। अभी 06 साल से हमारे लोखण्डी गांव में गर्मी में एक भी फसल नही होता है। बरसात में होता है और भी काला रह जाता है और हम काला फसल को बेच नहीं पाते हैं। हमारी समस्या का कौन निराकरण करेगा। मैं कलेक्टर महोदया से कहना चाहता हूं कि आप जाके पहले लोखण्डी का निरीक्षण करिये और लोखण्डी से आते हुए ये घुटकू प्लांट तक के जितने रोड किनारे जमीन है जहां से इनका कोयला गाड़ी गुजरता है। इनका सड़क नहीं है वो हमारी जमीन है और हम इसलिए लड़ने आये हैं कि प्लांट का पूरा विरोध हो। हम नहीं चाहते कि प्लांट खुले। प्लांट नहीं खुलना चाहिए। हम विरोध में हैं।

27. **श्री भोलू टंडन, ग्राम–उसलापुर** :– जब हमारे गांव के एरिया में नहर बह रही है। कोल वॉशरी खुला और दो पैसा कमाने के नाम से ला के खड़ा कर रहे है। जब तक फिल कोल रहेगा, तब हमारा विकास होगा। विकास का गंगा बहेगा। प्रकाश

का गंगा बह रहा है। जहां देखो वहां बेरोजगारों को रोजगार मिल रहा है। बेसहारों को सहारा मिल रहा है। आज 2 पैसा 4 पैसा के नाम से आपस में लड़वाते हुए, आपसी समझौते के नाम से बेरोजगारों को धमका रहे है। गुडांगर्दी कर रहे हैं।

28. **श्री सहदेव टंडन, ग्राम–उसलापुर** :– प्लांट खुले।

29. **श्री अभिषेक सोनी, ग्राम–घुटकू** :– विकास हो रहा है ना, बहुत विकास हो रहा है, गांव में इतना अच्छा पानी मिल रहा है। लोग मीठा पानी पी रहे है। वाटर लेवल जीरो पे आ गया है। प्लांट के वजह से वाटर लेवल जीरो पे आ गया है। रोजगार के बारे में बात कर रहे है ना, 90 परसेंट लोग मजदूर की ओर जा रहे है पढ़े–लिखे लोग कोयला ढो रहे है। बच्चों का भविष्य चाहते हैं तो खेती का मालिक बने, ना कि कोल वॉशरी का मजदूर बने। अपना भविष्य खुद चुनेंगे आप लोग।

30. **श्री राजीव लोचन श्रीवास, ग्राम–घुटकू** :– मैं भी कोल वॉशरी का पूर्ण रूप से समर्थन करता हूँ। कोल वॉशरी के खुलने से आस–पास के क्षेत्र के सभी बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा और क्या अच्छी बात हो सकती है।

31. **श्री लोचन जांगड़े, ग्राम–उसलापुर** :– रोजगार मिलना चाहिए।

32. **श्री सुभाष कोसले, ग्राम–उसलापुर** :– मैं पढ़े लिखे युवा हूं। मुझे रोजगार चाहिए और प्लांट खुलना चाहिए। हमारे यहां विकास होना चाहिए। प्लांट होना चाहिए इसका समर्थन देता हूँ।

33. **श्री पंकज कुर्रे, ग्राम–उसलापुर** :– प्लांट खुलना चाहिए।

34. **श्री रामकुमार पटेल, ग्राम–घुटकू** :– प्लांट खुलना चाहिए।

35. **श्री राजेश खाण्डे, ग्राम–उसलापुर** :– प्लांट खुलना चाहिए। मैं कोल वॉशरी में काम करता हूं। समर्थन दे रहा हूं।

36. **श्री त्रिलोचन, ग्राम–तुर्काडीह :–** कोल वॉशरी खुलना चाहिए।

37. **श्री रतन लाल, ग्राम–निरतू** :– जगह तो, आपे मन दिये हव, जगह ल तुमही मन बेचे ह। आज ओमा प्लांट ल खोलत हे त ब्रेक लगावत हव। ए हा कोन सा नियम है भाई। आज काम खोलत हे, गरीब मन जीही करके काम ल खोलत हे। मैं अतके चाहत हव के गरीब बर आज भईया प्लांट ल खोलत हे। गरीब मन जीही करके खोलत हे। हमर ऐमा सहमत हे।

38. **श्री जितेन्द्र मधुकर, ग्राम–करहीपारा** :– आज हम जमीन दिये हन भईया ल। जमीन बेचे हन सब ला रोजी पानी मिले हे। कोई ल नौकरी देवत हे। कोई ल आउ कुछु देवत हे। बिगडे काम ल बनात हवे। आज हम जमीन नई देतेन झा भईया ला त हमला कुछ सम्पति देतिस का। आज पूर्ण विरोध करही ये तुर्काडीह। घुटकू वाला के कोई जमीन नहीं है। घुटकू वाला मन पैसा खाके कंपनी खोलवाये हवन। आज हमर करही अउ निरतू। निरतू के जमीन नई हे। सिर्फ करही अउ लोखड़ी के हे। आज काही अउ लोखड़ी के आदमी टोटल मरत हन। झा भईया सपोर्ट करथे। झा भैया हमर लिये जिंदाबाद हे। धुर्रा उड़ात हे त झा भईया हमर लिये पानी डलवाथे रोड म, धुर्रा मत उड़ाय कईके। आज पंचायत म सरपंच कोई जगह रोड बनाये ल कईबे ता नई बनाये। सरपंच ल कईबे, पंच ल कईबे त दू रूपिया के खर्चा नई करव कईथे। आज टेप कईबे त टेप नल, नई लगवा सके। अउ झा भईय बोर खोदवाये ये गांव म।

39. **श्री मनोज खाण्डे, ग्राम–घुटकू** :– मैं सुन रहा हूं कल से गांव का विकास हो रहा है, गांव का विकास हो रहा है, गांव का विकास हो रहा। किसका विकास हो रहा है भईया। झा जी एक प्लांट बनाये थे आज उनका तीन प्लांट बन रहा है। किसका विकास हो रहा है। यहां जो बैठे हैं जो 200 रूपया आज से 06 साल पहले मजदूरी थी आज भी 200 रूपया मजदूरी है। कहां का विकास हो रहा है आप लोगों का। 12 घंटा काम ले रहे हैं मजदूरों से और 220 रूपया रोजी दे रहे हैं। कहां से विकास हो रहा है भईया, किसका विकास हो रहा है। अपनी ताकत को पहचानों। अपनी ताकत को पहचानों, जहां थे वहीं हो। आज से 6 साल से पहले जो थे वहीं हुआ है और आने वाले समय में यहीं रहोगे। आज उनका एक प्लांट के बाद तीन प्लांट हो गया। अगले साल पांच हो जायेगा।

40. **श्रीमति नीलम पटेल, ग्राम–लोखंडी** :– छत्तीसगढ़ महतारी को किस नाम से पहचान करते है, हरियाली के नाम से। तो हरियाली कहां है। हरियाली को आने

से पहले नष्ट कर दिया जा रहा है। ये छत्तीसगढ़ महतारी नहीं, करिया महतारी बना रहे हैं। हमारे गांव के जो किसान हैं जो यहां पे आके बोलेगा कि मेरा फसल नुकसान होता है। रात दिन मेहनत करके, गायों से बचा के, धूप, गर्मी, बरसात इतना परिश्रम किये और उसके बाद उसका फसल नुकसान हुआ तो उसको धक्का दिया जाता है यहां पर। सुनवाई कर रहे हैं यहां पर तो समर्थन के लिए भी है विरोधी के लिए भी है। तो सबका सुनना चाहिए न। काहे किसानों को यहां से भगाया जाता है। काहे उसको सुनने नहीं दिया जाता है। कहते हैं छत्तीसगढ़ महतारी की जय। पौधारोपण के मांग कर रहे हैं सरकार से, हमारे समर्थन भाईयों को समझना चाहिए। उसके लिए मांग कर रहें। अकेले तीन पौधे हमारे लोखण्डी गांव के सोसायटी के सामने लगायी हूं। जो नीम का पेड़ है हमारे सोसायटी में जाते है चावल वितरण में तो वहां पर जब छाँव में विश्राम करते हैं। तीन पौधा वहां पर साक्षात है रूख के रूप में और वैसे जितने जनताएं है आप लोग सब के सब पौधारोपण करेंगे तो हरियाली माता को आना ही पड़ेगा। आप लोग तो उस दरिंदे वायु प्रदूषण को निमंत्रण दे रहे हैं। जो हमारे आने वाले पीढी को नुकसान कर वाले है और हमारे आगे में किसी को जीने नहीं देगा। अपने भविष्य के बारे में सोच रहे हैं। ये लोग इनको बहला फुसला कर समर्थन के लिए किया जा रहा है। समर्थन मेरे तरफ से नहीं है। रिक्वेस्ट है अधिकारी महोदय से कि हमारा सहयोग करें।

41. **श्री सत्य प्रकाश सोनचे, ग्राम–घुटकू** :– प्रबंधक द्वारा हर मोहल्ले में जाकर लालच देकर, भड़काकर, ताकि जनता उसके समर्थन में आ जावे। यहां जितने भी आये है उन सभी से पूछ लीजिए सत्य प्रकाश सोनचे समस्त नागरिको से निवेदन करता है कि प्रलोभन में न आये और आने वाले अपने पीढ़ी को बचाने में अपना समर्थन देगें। जिसका पूर्ण विरोध करें। मैं प्रलोभन के लिए लोगों से कहता हूं कि ऐसा कौन सा जनहित में कार्य किये हैं मुझे लिखित में दिया जाये। माननीय उच्च अधिकारी से निवेदन करता हूं कि देने के लिए कुछ कहिये। मेरा आरोप है कि प्रशासन से, अधिकारी भी कोल वॉशरी का समर्थन न करें।

42. **कु. ज्योति पटेल, ग्राम–लोखंडी** :– मैंहां कोल वॉशरी नहीं चाहथंव। काहे कि जतका भी स्टूडेंट हे, छात्रा हैं ओ मन ल आये जाये म बहुत परेशानी होथे। अउ ओहिच मेर कोयला डिपो हे, अउ ओहिच में स्कुल हे जेकर कारन बहुत परेशानी होथे। अउ जतका भी स्टूडेंट आथे, छात्रा आथे ओखर बहुत एक्सीडेंट होथे। बच्चा मनके एक्सीडेंट होथे। एक झन बच्चा तो पीला पानी म मर गीस हवय।

ओही कोयला डिपो खोलीस त मरीस हे। तेखरे लिए मैं चाहत हव के कोयला डिपो नई खुलना चाही।

43. **श्रीमती कुंती बाई खाण्डे, ग्राम–तुर्काडीह** :– मैं भईया से बोलत हव के जमीन ल खुद के पास पैसा के रूप म बेचे हव। एक करोड़ के जगह दो करोड़ म बेचे हंव। अब ओ भईया ओ जमीन म कुछ भी बना सकय। फिल कोल खुलना चाहिए।

44. **श्री सहोद्रा, ग्राम–करहीपारा** :– भईया हा खेती बाड़ी ल अच्छा दाम म खरीदे हे। ओ ह धान उपजाय या सोन उपजाय ओखर अधिकार हे कोयल डिपो बनाहय।

45. **श्री गजेन्द्र कुमार खाण्डे, ग्राम–घुटकू** :– उद्योग लगने से ग्राम पंचायत को जो भी फायदा है उसके बारे में कुछ बोलना चाहता हूं। मेरा ग्राम पंचायत घुटकू से आज तक जो भी है गव्हरमेंट से जो रूल है वो फालो किया जा रहा है। मैं समर्थन में, मैं कोल वॉशरी स्थापित करने के लिए समर्थन दे रहा हूं।

46. **श्रीमती लोहर बाई पटेल, ग्राम–लोखण्डी** :– कोल डिपो नहीं होना चाहिए। मोर 10 एकड़ यहां जमीन है कोल डिपो के नीचे में कुछ नहीं हो रहा है। भिडीं फसल, कुछ फसल नहीं हो रहा है। कोल डिपो होना नहीं है। नहर बना लेबे। रातो रात चोरी के माल लेजबे। सड़क बना दिये हे। खम्भा टूट रहा है। कोई कोल डिपो होना नही है।

47. **श्रीमती अनिता पटेल, ग्राम–लोखण्डी** :–कोयला डिपो नहीं चाहिए। मैं भी विरोधी हूं।

48. **श्री राहुत तिवारी, ग्राम–सकरी** :– मैं कोल वॉशरी को लेकर सहमत हूं क्योंकि जो युवा भाई हैं उन लोगों को रोजगार मिलेगा।

49. **श्री गोपेश कुमार लोनिया, ग्राम–लोनियापारा** :– जिस तरह हर सिक्के का दो पहलु होते हैं। उसी प्रकार विस्तार के लिए दो पहलु हैं। अच्छा बात ये है कि पूंजीपति, पूंजीपति की ओर बढ़ता चला जाता है और लेबर वर्ग, जो लेबर ही रह जाता है नीचे के तरफ चला जाता है। इसमें किसी भी प्रकार का सुरक्षा में ध्यान

नहीं दिया जाता है। इसलिए मैं इसका समर्थन में नहीं हूं। ये किसी भी प्रकार से विस्तार की ओर नहीं जाना चाहिए।

50. **श्री विजय कुमार मिश्रा, ग्राम–घुटकू** :– कोल वॉशरी खुलना चाहिए। जेमा 100 लोग काम कर रहे हैं। मैं जेन मांग करे हव तेन सब लगना चाही। पेंड़ लगना चाहिए। गार्डन में पेड़ लगही। 100 पेड मंगाये हव। ये प्लांट खुलना चाहिए।

51. **श्रीमती सुकीती बाई पटेल, ग्राम–घुटकू** :– ये हमका सहमत नहीं है। कोयला डिपो नहीं चाहिए, नहीं चाहिए। आज भी बोलत हव, लकड़ी जला लेहूँ, खाना बना लेहू, मेरे को नहीं चाहिए। नहीं चाहिए, नहीं चाहिए, कोयला डिपो नहीं चाहिए।

52. **श्री तुलाराम लोनिया, ग्राम–घुटकू** :–कोल वॉशरी का विस्तार हो रहा है, मैं इसका विरोध करता हूँ। क्योंकि कोल वॉशरी खुलने से अभी तक हमारे गांव का विकास नहीं हुआ है। नुकसान हो रहा है, किसी भी सदस्य का वहां नौकरी नहीं लगा है। मैं इस कोल वॉशरी का विरोध करता हूं।

53. **श्रीमती रेवती बाई, ग्राम–तुरकाडीह** :– मैं पूछत हव सब ल, जब बाहर के आदमी ल बेचे हव जमीन ला, तबे ओ भईया ह लेके कोयला डिपो बनाईसे। आज हमन अपन धान खेत ल बेचे हन भईया करा पईसा के लालच म। अगर ओ भईया ल देना नई चाहतेन कोयला डिपो नहीं बना सकतीस। एक करोड़ के जगह दू करोड़ दिये हे भईया हमला पईसा। खुलना चाहिए।

54. **श्रीमती शारदा पटेल, लोखण्डी** :– पूरा धुआं, धक्कड़ जावत हे। त कहां ले हमर जमीन म फसल उगही। भईया हो तुमही मन बतावा न। बेचना चाहत हन। बर्बाद करत हे। अउ उल्टा समर्थन हे, समर्थन हे कहिके बोलत हन। मेहनत करके जियत हन। नहीं चाहिए, नहीं चाहिए, कोयला डिपो नहीं चाहिए।

55. **कु. अनुराधा पटेल, ग्राम–घुटकू** :– मैं श्रीमान कलेक्टर महोदया से निवेदन करती हूं कि कृपया ये कोयला प्रोजेक्ट को खुलने न दें। क्योंकि इसके बहुत ही ज्यादा हानिकारक हमारे स्वास्थ्य पर पड़ेगा। इससे जो हानिकारक वायु निकलती है वे हमारे पर्यावरण को बहुत की ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। ओजोन परत में लगातार छिद्र पड़ने के कारण वायुमण्डल लगातार गर्म होते जा रहा है। जिसके

कारण पूरे वायुमण्डल में गर्मी का एहसास हो रहा है। कोई भी ऐसा नहीं चाहता है कि गर्मी का कारण उनके तबीयत खराब हो। इसलिए महोदय से मेरा निवेदन है कि इस कोयला को खोलने का आज्ञा न दें।

56. **श्री भगवानी यादव, ग्राम–निरतू** :– हमारे ग्राम निरतू में प्लांट खोल रहे है उसमें हम लोगों का समर्थन है। मेरे हिसाब से जो भी कर रहे है अच्छा ही कर रहे है।

57. **श्री ईश्वर प्रसार सोनी, ग्राम–निरतू** :– मैं समर्थन करता हूॅ।

58. **श्री विवके माथुर, तुर्काडीह** :– मैं जो कोल डिपो खुल रहा है उसका समर्थन करता हूॅ। मैं ये बोल रहा था कि प्राईवेट जॉब चाहिए या सरकारी जॉब चाहिए। मैं उनसे ये पूछना चाहता हूं कि गांव में कितने प्राईवेट जॉब वाले है या कितने सरकारी जॉब वाले है और कितने बेरोजगार है। इसे समर्थन करें। नये–नये उद्योग आयेंगे, तभी तो क्षेत्र का विकास होगा। नये–नये उद्योग आयेगा तब तो इकोनामी बढ़ेगा। तब तो रोजगार मिलेगा। सभी को सरकारी नौकरी पाना संभव नहीं है। आदमी अपना रोजगार कैसे चलायेगा। मेरे गांव में कितने महिलाऐं लोग जी रहे है उसमें जाते है काम पे। कितने भाई लोग जाते है। सबको रोजगार सबको पैसा मिल रहा है। मेरा यह समर्थन है कि नये उद्योग को लाना चाहिए। जिससे इकोनामी भी होगा और युवाओं को रोजगार मिलेगा। कोल डिपो का समर्थन है।

59. **श्री आशीष माथुर, ग्राम–तुर्काडीह** :– यह प्लांट खुल रहा है उसका समर्थन करता हूं। समर्थन इसलिए करता हूं कि हमारे यहां उद्योग नहीं होगा तो रोजगार कैसे मिलेगा। रोजगार नहीं मिलेगा तो हमारे गरीब भाई काम नहीं करेंगे तो दिक्कत पैदा होगा। हमारी एक दीदी बोल रही थी कि हरियाली लाओं, हरियाली लाओं। सरकार से यहीं मांग है कि रोजगार दो, रोजगार दो। अगर उद्योग नहीं होगा तो सरकार कितनो को रोजगार देगा। मैं ये बोलना चाह रहा हूं कि हमारे यहां बहुत से महिलाएं, दीदी, बहनें, भाइयें है ओ वहीं लाकर अपना पेट पालन कर रहे है। वहीं से अपना रोजगार प्राप्त कर रहे है और अपने घर में रह रहे है। कई भाई रोजगार के तलाश में बाहर जा रहे है। यू.पी. जा रहे, इलाहाबाद जा रहे है, गुजरात जा रहे है। अगर हमारे यहां उद्योग लग जाता है तो सभी लोगों को यहीं से रोजगार मिल जायेगा। इस नाम से मैं पूर्ण समर्थन करता हूं। प्लांट खुलना चाहिए।

60. **श्री रामदीन लूनिया, अध्यक्ष लूनियासमाज छ.ग.** :– जो अपना प्लांट खोला जा रहा है, अपना घुटकू वाला उसके लिए मैं अपना लोनिया समाज के तरफ से पूरा समर्थन करता हूॅ।

61. **श्री हीरालाल लूनिया, ग्राम–घुटकू** :– ये कोल वॉशरी के प्लांट के विषय से कल से जन सुनवाई का कार्य चल रहा है और हमारे गणमान्य नागरिकों के द्वारा महिलाओं के द्वारा भी अनेक प्रकार से पक्ष और विपक्ष में बात होता रहा है और ये सब होते हुए समापन की ओर कार्यक्रम चल रहा है। मैं इस गांव का नागरिक हूॅ। जहां उद्योग खुला हुआ है वहां का ही नागरिक हूं। आज पर्यावरण के दृष्टि से और ये जो अफवाहें फैलाये जा रहे है कि ऐसा हो रहा है, वैसा हो रहा है। ये जरूर है कि जहां प्लांट लगा है उसके किनारे खेत है कुछ न कुछ तो हो ही रहा है भाई। यहां तक सब ठीक है, और मैं तो यही चाहूंगा ये हमारे कोल वॉशरी के मैनेजर है और जो वहां के संचालक है हमारे झा जी है। मेरा निवेदन है कि गरीब हमारे ग्राम के आस–पास के महिला आपके प्लांट मे ंकाम करने के लिए जा रहे है। धूप में भी अनेक कार्य जो करते रहते है। उस दृष्टि से उनका जो भुगतान किया जाता है उनकी मेहनत का मेरे देखने में बहुत कम लग रहा है भाई। इसलिए मैं प्रार्थना करूंगा उद्योग के जितने भी उनके जुड़े हुए जो अधिकारी है वहां इस पर विचार करेंगे। इस शिकायत गांव में अधिकार हम लोग भी देख रहे है। जितने भी काम करने जाते है और जा करके वहां से वापस लौटते है तो निश्चित रूप से थोड़ा सा जो भुगतान को मजदूरी दिया जाता है उस हिसाब से बहुत कम लग रहा है। इसलिए प्लांट के महोदय से मेरा बार–बार निवेदन है कि हम जानते है कि हमारे लाख पक्ष और विपक्ष करेंगे पर आपका उद्योग तो खुलने वाला है और खुलेगा ही। इसमें किसी प्रकार का दो मत नहीं है। जैसे गांव वाले आपके विरोध में भी आपके पक्ष में भी लोग आपसे अनेक प्रकार से आपके खिलाफत गये है। ये सही बात है भाई जहां जिसका कुछ नुकसान होता है तो पीड़ा तो निश्चित होता है। मैं प्लांट के प्रबंधक से बार–बार निवेदन करूंगा कि गांव को जो समस्या है, और कुछ भाई लोग बताए है के भाई हमारे गांव में बहुत प्रकार के सहयोग जो है झा जी के द्वारा मरनी, हरनी में भी दिया जाता है। कुछ भी बड़ा काम आ जाता है जब उसके पास जाते है तो सहयोग मिलता है। और सही बात है झा के द्वारा निश्चित रूप से सहयोग दिया जाता है। वो सहयोग की राशि जो है कुछ सीमित जगह पर है। इसका विस्तार भी होना चाहिए। ये मेरा सुझाव भी है। जो मैं समस्या इस ग्राम का बताया हूं।

विरोध का भी। विरोध के ऊपर भी उसी तरह ध्यान देना है और यह उद्योग खुले। तो हम सब भाई जो है विरोध पक्ष–विपक्ष होता रहता है। अच्छे ढंग से हमारे गांव को सुचारू रूप जो कल्याणकारी योजना के लिए हमको प्रलोभन दिये है उसको पूरा करना चाहिए।

62. **श्रीमती लक्ष्मी पटेल, ग्राम–लोखण्डी** :– मैं कोल डिपो ल समर्थन नई दव। मोर गांव के उपसरपंच बोलथे कि प्रवीण झा ह कोरोनाकाल म दाल चावल देईसे, गरीब आदमी ल बाटीस हवे। लेकिन कोई ल नई बांटे हे। बांटे होही, देय होही तो खुद खाये हे। हमन ल कोई ल नई मिले हे गरीब आदमी ल। कल बोलिस हे उपसरपंच ह। मैं प्रदूषण से बचना चाहत हव लोखण्डी ल बचाना चाहत हव।

63. **श्री रामकुमार गढेवाल, ग्राम पंचायत लोखंडी, उपसरपंच** :– अभी मेरे ऊपर गांव के महिलाऐं अभी आरोप लगा रही है कि जो करोना काल प्रवीण भईया जी के द्वारा जो दिया गया था राशन, उसको मैं अपने पूरे पंचायत में जितने भी पंच लोग है उनके साथ में जा करके घर–घर जो दीनहीन है। जो वास्तवित में जिनके पास खाने पीने के लिए नहीं था और जिनके घर में कोई कमाने वाले नहीं थे। उनके घर में जा करके मैं पंचों के साथ जा करके सरपंच जी उसका लड़का जो है कमल ध्रुव ओ भी मेरे साथ में गया था और बांटे है। अभी बोलेंगे तो मैं ऐसे 10 लोगों को यहां पे लाकर खड़ा कर दूंगा। अगर उद्योग यहां पर स्थापित हो रहा है इससे लोगों को हमारे गांव में ही बहुत सारे लोगों को रोजगार मिला हुआ है। बहुत सारे लोग है। जिसमें से कन्हैया गढ़ेवाल है, छेदी गढ़ेवाल है, बलराम गढ़ेवाल है, भागीरथी निर्मलकर है ऐसे बहुत सारे लोग है और जो हमारे गांव के महिला है कल्याणी निर्मलकर उसका पति रामलाल निर्मलकर भी कोल फिल है उनमें वहां पर लगातार काम कर रहा था। अभी कुछ ही समय हुआ है काम नहीं कर रहा है। इस कारण से इस फिल का विरोध कर रहे है। मैं यही निवेदन करूंगा कोल फिल का विस्तार होना चाहिए। उद्योग लगने से भारी मात्रा में जो बेरोजगारी है वो दूर होगा। विस्तार होने से किसी प्रकार का मुझे कोई तकलीफ नहीं है। जो भी पर्यावरण वातावरण दूषित हो रहा है। उस वातावरण शुद्ध करने के लिए श्रीमान प्रवीण झा के द्वारा वृक्षारोपण कराया जायेगा और जो भी जनससमया है उसे दूर कराया जायेगा।

64. **श्रीमती शांति, ग्राम–उसलापुर** :– कोल डिपो खुला है चलेगा, चलेगा।

65. **श्रीमती सुशीला, ग्राम–उसलापुर** :– कोल डिपो खुलना चाहिए। हम गरीब कहां जीबो।

66. **श्री कन्हैया लाल गड़ेवाल, ग्राम–लोखंडी** :– मैं यहां दसवां साल के पहली मैं अपने गांव में थे तो मैं मजदूरी करने जाता था। अपने बच्चे को पढ़ाई नहीं कर पाता था। उनके लिए कुछ व्यवस्था नहीं था। हमारे यहां कोल डिपो खुला तो प्रदीप भईया मुझे नौकरी दिलाया। वहां पर मैं नौकरी किया। आज मेरे बाल–बच्चा सदा सुखी से है। आज नौकरी देने के लिए हमारे मालिक प्लांट खोल रहा है तो इसी गांव वाले को आपत्ति है। एक दो नौकरी नहीं दे सकते है तो किसी को लूट भी नहीं सकता है। आज प्लांट खुलने जा रहा है तो गांव वाले को आपत्ति हो गया है। आज मैट्रिक, कॉलेज बीए पढ़े–लिखे वाले बिलासपुर में घूम रहा है, गांव में घूम रहे है। उनको किसी को एक रूपया देने वाला नहीं है। किसी को रोजी–रोटी मिल रहा है। बाल–बच्चा को तो रोजी–रोटी मिलेगा। ये भी नहीं करने जा रहे है गांव वाले लोग।

67. **श्रीमती सुनीता सोनवानी, ग्राम–उसलापुर** :– कोयला डिपो खुलना चाहिए। मजदूरी मिलना चाहिए।

68. **श्री शिव यादव, ग्राम–करहीपारा** :– जब हमारे यहां 500 आदमी काम कर रहे है। उनके छोटे–छोटे बाल बच्चें है। दूर–दूर के आदमी और गांव के आदमी सब शांत है। करे तो क्या करें और सब कर भी रहे है। सबके बाल–बच्चे छोटे–छोटे सब जी खा रहे है। जेमा हमकों विरोध लगाये के काय जरूरत है। हम तो कह रहे और, और प्लांट खोला 500 आदमी और भरेंगे हम।

69. **श्रीमति कांति, ग्राम–उसलापुर** :– कोयला डिपो खुलना चाहिए।

70. **श्रीमती लक्ष्मी लहरे, ग्राम–उसलापुर** :– कोयला डिपो खुलना चाहिए।

71. **श्रीमती सोनी धृतलहरे, ग्राम–उसलापुर** :– कोयला डिपो खुलना चाहिए। रोजगार मिलना चाहिए।

72. **श्रीमती गंगा बाई, ग्राम–उसलापुर** :– कोयला डिपो खुलना चाहिए। रोजी रोटी बनना चाहिए।

73. **श्री सीताराम, ग्राम–घुटकू** :– हमारे यहां बेरोजगार लोगों को काम मिलेगा। समर्थन कर रहा हूं।

74. **श्री कृष्ण कुमार लोनिया, ग्राम–घुटकू** :– केन्द्र सरकार हो या राज्य सरकार बाहर के कंपनी को अपने–अपने एरिया में कारखाना खोलने के लिए जमीन देते हो। हमारे यहां ये सौभाग्य की बात है, क्योंकि बगैर बुलाये हमारे यहां कोल वॉशरी खुला और उसका विस्तार होने जा रहा है। जिसमें हमारे गांव का एवं अगल–बगल गांव का हजारों आदमी का रोजी–रोटी चलेगा। मैं मान रहा हूं इसमें कुछ नुकसान है। अगर 25 परसेंट नुकसान है तो 75 परसेंट फायदा भी है। कंपनी के द्वारा ग्राम विकास में पूरी सहयोग कर रहा है। अभी करोना काल में प्रवीण झा द्वारा मेरे यहां 2 बोरी चांवल, 5 किलो राहर का दाल, 2 लीटर तेल पहुंचाया गया। क्योंकि मेरा परिवार बहुत बड़ा है। मैं असमर्थ था बाहर निकलने में। मैं उनका आभारी हूं। इसी प्रकार मेरे गांव में जो है उनके द्वारा राशन उपलब्ध कराया गया। उसके साथ–साथ मेरे बच्ची की बीमारी में प्रदीप झा द्वारा 25,000 रूपया मुझे मेरे बच्ची के बिमारी के लिए सहायता दिये। इसके बावजूद गांव में सभी गरीबों को टाइम बे टाईम सहायता देते है। किसी के शादी में देते है। किसी के मरनी–हरनी में दे रहें है। रह गया पर्यावरण की बात पेड़–पौधा लगवा रहे है तो इसमें आप लोगों को क्या आपत्ति। मैं इनको पूरा सहमत देता हूॅ एवं मेरे परिवार सभी सहमत देते है।

75. **श्रीमती रेशमी टंडन, ग्राम–उसलापुर** :– कोयला डिपो, खुलना चाहिए। खुलना चाहिए, खुलना चाहिए।

76. **श्रीमती कुमारी, ग्राम–उसलापुर** :– कोयला डिपो, खुलना चाहिए।

77. **लच्छन, ग्राम–उसलापुर :–** कोयला डिपो, खुलना चाहिए।

78. **श्रीमति कांति बाई, ग्राम–उसलापुर** :– कोयला डिपो, खुलना चाहिए।

79. **श्रीमति ललिता, ग्राम–उसलापुर** :– कोयला डिपो खुलना चाहिए।

80. **श्रीमती निर्मला माथुर, ग्राम–तुर्काडीह** :– भईया हा आये हे ईहा ता सबला काम मिलत हे। एमन ल का आपत्ति हे। पहली एक ठक कोयला डिपो खुलीस का, कहां गए रहीन एमन सब लोखड़ी वाला। अउ दूसरा वाला खुलीस ता कहां गे रहीन लोखड़ी वाला। अभी खुलत हे ता का आपत्ति हे एमन ला। गरीब आदमी ला मजदूर देना चाहिए। कोयला डिपो खुलना चाहिए। पढ़े–लिखे को नौकरी मिलना चाहिए।

81. **श्री रामचरण, ग्राम–घुटकू (घनापारा)** :– हमारे गांव में पारस पॉवर का चार–पांच से पहले विस्तार हो चुका है। कोल डिपो का पूरा बर्ताव मुझे अच्छी तरह से पता है कि ये कितना हानिकारक है। हमारे गांव में 10 प्रतिशत व्यक्ति को कोल डिपो के वजह से चर्म रोग हो गया है। हमारे गांव में कई प्रकार के बीमारी शूरू हो गया है सर जी। हमारे गांव में कृषि का कोई भी काम नहीं हो पा रहा है ठीक ढंग से। हमारे गांव में कृषि क्षेत्र बंजर हो रहा है। 20 परसेंट हमारे कृषि प्रधान क्षेत्र बंजर हो चुका है। हमारे गांव के पर्यावरण बिल्कुल असंतुलित हो गया है। बार–बार प्रार्थना करता हूं इस विषय में ध्यान दीजिए। कोल डिपो से हमारा पर्यावरण किसी प्रकार से कोई संतुष्टि नहीं है। हर प्राणी हमारे यहां तो बंदर भी काला हो चुके है। सभी जानवर काला हो चुके है। जानवर के लिए उपयोग होने वाले घास भी काला हो चुके है। जो जानवर खाते है घास को वो बिमारी का शिकार बन जाते है। कुछ समय बाद उसका मृत्यु निश्चित हो जाते है। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूं शासन प्रशासन से और यहां उपस्थित सभी सामान्य जन से प्रार्थना करता हूं कि थोड़ी से लाभ का ध्यान न देते हुए इसका विरोध करिये और इसके खिलाफ करिये। इसका विरोध करता हूं। यह कोल डिपो का विस्तार न हो।

82. **श्री सूरज पटेल, पंच, ग्राम–लोखंडी** :– कोल वॉशरी, स्टील प्लांट और पॉवर प्लांट जो खुल रहा है मैं उसका समर्थन करता हूॅ एवं मेरे गांव के आस–पास नवयुवक बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा। काबिलियत के हिसाब से दिया जायेगा। मैं सूरज पटेल समर्थन करता हूॅ कि कोल वॉशरी खुले और स्टील प्लांट खुले सभी प्लांट खुले।

83. **श्री कमल धुव्र, सरपंच प्रतिनिधि, ग्राम पंचायत लोखण्डी** :– सबसे पहले मैं आम जनता को यह सूचना देना चाहूंगा। समस्या पहले समझ लेनी चाहिए, उसके बाद बात करनी चाहिए। आज यहां हर कोई बोल रहा है, कोल डिपो नहीं खुलना चाहिए। कोल डिपो खुल चुका है आलरेडी यहां। केवल विस्तार के लिए बात

किया जा रहा है। समस्या है, समस्या के निराकरण के लिए हमेशा झा जी सहयोग करते है। बात यह है, कि आम जनता व उनके द्वारा पहुंचाया गया लाभ ओ हीं पहुंचाता। मैं सर से रिक्वेस्ट करूंगा कि डायरेक्ट पब्लिक तक के वह लाभ पहुंचाये। बाकी उनके द्वारा हमेशा सहयोग दिया गया है। करोना काल में भी, लॉकडाउन में भी, पंच के द्वारा बांटा गया है मैं उसमें शामिल नहीं था। लेकिन मेरे को सूचना मिली है गरीब लोग, आके मेरे को बतायें कि हमको दिया गया फायदा करके। रही बात बेरोजगारी के बात कर रहे है, काम नहीं मिल रहा है काम क्वालिफिकेशन आपके एजुकेशन के हिसाब से मिलेगा और हमारे गांव में कई लोग कार्य कर रहे है। सर मैं हाथ जोड़ के रिक्वेस्ट करूंगा बड़े–बड़े अध्यक्ष, अधिकारी लोग आके बोल गये है कि चाहे कुछ भी हो ऊपर नीचे ओ तो कोल डिपो खुल के रहेगा कोई कुछ नहीं कर पायेगा। लेकिन रिक्वेस्ट ये है सर जी आप डॉयरेक्ट पब्लिक से कन्टेक्ट करके जो समस्या है उसके समाधान के लिए बात करें और पंचायत प्रतिनिधि से बात करें। खाने–पीने वाले लोगों से बिल्कुल दूर रहे। सर का हमेशा सहयोग रहे, कभी भी किसी भी चीज के लिए जैसे पानी डालने के लिए बोले सुबह, दोपहर, शाम बकायदा हमारे बोलने से डालते है पानी। उनका सहयोग हमेशा रहता है। समस्या पहले समझकर पब्लिक बात करें।

84. **श्री विष्णु प्रसाद लूनिया, ग्राम–घुटकू (लुनियापारा)** :– मैं इस कोल फिल का समर्थन करता हूॅ। लेकिन मैनेजमेंट से निवेदन करता हूं कि बहुत ऐसे किसान है, जिसका खेती उनके कोल फिल के पास है, वो अगर उनको समस्या का अभी समाधान बहुत जरूरी है। मैं निवेदन करूंगा, कि जो भी किसान का कोल फिल के पास में है, आस–पास में कोई प्रकार समस्या है तो उसका निदान करें और अपने गांव वाले को आश्वस्थ करना चाहता हूं कि अगर किसी प्रकार किसी को कोई समस्या है, तो ग्राम पंचायत में रखे, बात और इस समस्या का निदान किया जायेगा। कोल फिल का समर्थन करता हूं।

85. **श्री अशोक कुमार, ग्राम–तुर्काडी** :– मैं कोल फिल विस्तार का समर्थन करता हूॅ। मैं पर्यावरण से संबंधित जो भी नियमानुसार जो किसान भाई है उनका ध्यान रखना है। मैं भईया से निवेदन करूंगा किसी प्रकार का डस्ट न हो।

86. **श्री ताराचंद यादव, ग्राम–निरतू** :– मैं असमर्थन में आया हूं। जैसे बहुत सारे लोग आ रहे थे और जिसको बोलने नहीं आ रहा है ओ भी बोलता है, सिर्फ समर्थन

करता हूं। किस तरीके से समर्थन कर रहे है। कुछ ऐसे लोग है, जो इस गांव के नहीं है। देखा जाये यहां से 15 किलोमीटर दूर से आये है, कोई 20 किलोमीटर दूर से आये है, कैसी उसको यहां नौकरी चाहिए और कैसा यहां आके बोल रहा है समर्थन। किस बेस पे लोगों को समर्थन, कैसे फार्म जमा कर रहे है। बहुत सारे किसान और कुछ लोग आके बोल रहे है, कि हमारे गांव में बहुत सारे ऐसी बाते हुआ जो सुन रहे थे मैं आम नागरिक हूं मैं निरतू से हूं। पढ़ाई करता हूं यही गांव में, खेती किसानी भी करता हूं। मोहल्ले में जानता हूं 10–15 घर है। लेकिन कभी मैंने नहीं सुना, जो झा जी, है उनके द्वारा कोई सरपंच या पंच कोई भी व्यक्ति जाके उनको सपोर्ट करते है, कुछ भी चीज दिया होगा। अभी तक तो सुनने में नहीं आया है। बहुत सारे लोग बोल रहे है, कि झा जी यहां तो सुनने वाला कोई नहीं है। ताली बजा के हो गया समर्थन ये समर्थन नहीं होता है। समर्थन और नौकरी देने के लिए भईया। आप लोग नौकरी दे दोगे घर में 05 लोग है, पांचों बर पैसा लगा दे। पांचों को नौकरी देगा झा जी। मेरे घर में पांच है दस है। उसका बच्चा भी पैदा होगा। आज के दिन में जनजीवन चल रहा है। निरतू में बहुत सारे घुटकू में, मेरे साथ 2–3 ऐसे भाई है जो हर दो दिन में दो हजार, पच्चीस सौ का सब्जी बेचता है। मैं भी हर दो दिन में बेचता हूं पंद्रह सौ, हजार रूपया, बारह सौ रूपया दो वक्त मेहनत करके। अपने खुद के खेतों में बाड़ी सब्जी लगाके दो हजार, बाईस सौ रूपया लोग कमा रहें है। एक घर में दस से पंद्रह लोग है। यहां तो हमारे पंचायत के जो भी जैसे बोल रहे है। पंचायत के लोग बोल रहे है। सरपंच हो, चाहे पंच हो। सरपंच आके जवाब देदे, कब–कब गांव में मीटिंग किया है। कब लोगों जानकारी दिया है, कब जनसभा रखा है, कब जाके गांव के पंच, गांव लोगों को या तो मोहल्ले के लोगों को बोला है। मेरे मोहल्ले के पंच आके जवाब दे सामने में। हमारे मोहल्ले के सभी लोग आये हुए है। फिल कोल खुल चुका हैं धांधली गिरी हो चुका है। यह सिर्फ दिखावा है कुछ किया गया था। धांधलीगिरी हो चुका है। कोई भी इंसान बिलासपुर से दूर चकरभाटा के लोग यहां पर आये है। कोल फिल खुलवाने के लिए। सोचो भाई चकरभाटा के लोग यहां रहता है कि निरतू और घुटकू और आस–पास के ओ लोग रहते है, थोड़ा तो शर्म करो, अपनी ईमान को तो जानों। भईया जिस जमीन जुड़े हो जिस दादा–परदादा से पांच पूरखा में 03 पूरखा को जानता हूं अपना। 25 साल उमर है। इस 25 साल के उमर में जब से पैदा हुआ हूं एक चीज देखा हूं। मेरे दादा खेती किसानी करके जीवन जीये। उनका बहुत अच्छा विस्तार हुआ। मेरे पापा जी है, आज हम जी रहे है। वो पीढ़ी दर पीढ़ी चल रहा है। जिनके पास नौकरी है पढ़ रहे है ओ नौकरी करने जा रहे है।

लेकिन बाकी जिनके पास नहीं है ओ क्या करेगा। उनके पास खेती किसानी नहीं रहेगा तो क्या करेगा। या तो बंधवा मजदूरी करेगा। गांव में कम से कम हमारे गांव में बारहवी क्लास में फेल होते होगें। ढाई सौ तीन सौ लोग दसवीं बारहवीं पढ़ाई करते है वैसे ही कॉलेज में हो जाता होगा। क्या ढाई सौ–तीन, सौ चार सौ लोगों को हर साल नौकरी देने का उनके पास दम है क्या। हर साल दो सौ ढाई सौ लोगों को नौकरी देगा। कितने पुराने लोगों को निकालेगा और कितने नये लोगों को डालेगा। बाकी लोग क्या करेगा। उनके पास तो ऑप्शन ही नहीं है फिर। एक बार नौकरी दे दोगे, एक लोग को दोगे, दो लोग को दोगे, बाकी लोग क्या करेंगे। न तो उनके पास खेत है, सोचो बोलने में भी लोगों को तकलीफ है। लोगों को देख रहा हूं भईया खुद के ऊनी ईमान नहीं है। पंद्रह सौ अपने लिए कमा सकते है। ठीक है नौकरी करेंगे हर घर के एक को लेगा और हर दो दिन का पंद्रह सौ देगा। भईया समर्थन दे। अभी कुछ लोग आये थे बोल भईया 10 किलो चॉवल, 05 किलो दाल, 01 किलो तेल वो तो कभी नहीं पहुंचा। मैंने तो नाम नहीं सुना। भईया खोला नहीं जा रहा है खुल चुका है। सिर्फ स्टेटमेंट लिया जा रहा है कि काम करना चाहते है नहीं करना चाहते तो बाहर के आने को तैयार है। पहले से बोल दिया गया। सोचो लोगों को बोलने में भी आपत्ति है। यहां कुछ महिला बोल रहे थे। विडियों भी बनाया हूं। महिला बोल रही थी कि जाने दो भाईया काम है, नही ंतो आज का रोजी देना। अब लोग रोजी में भी आना चालू हो गया है। भाई मेरे जिसको बोलने भी नहीं आता और यहां का है नहीं, उसको जाकर लेटर जमा करोगे लोगों को बोलवाओंगे। आज जिस जगह पर आ रहे हो, जिस किसान के जमीन को ले रहे हो, आज उनके बारे में बात करो ना। एक अनजान लोग खाने वाले से बात करके क्या मिलेगा। जो लोग है गांव के समस्या है, गांव के लोगों से जाकर पूछो, सरपंच को बोलो, पंच को बोलो, आम जनता लगाने का, जिला प्रशासन को परेशान करने का जरूरत नहीं है। गांव के लोगों को बताओं, उनसे सलाह लो, कौन क्या चाहता है। क्या प्राफिट है, क्या घाटा है। उसके बारे में बात करो। गांव सहमत देता है, कितना देता है समझ जाओगे। भईया लोगों को लाकर, लोगों को परेशान करके कोई मतलब थोड़ी है। जबरदस्ती उधर का इधर का लाके दे रहे हो। न सरपंच है न पंच है ग्रुप बनाया गया है हमारे गांव में। उस ग्रुप में बहुत शांत है, उपसरपंच, सरपंच का कोई टिप्पणी नहीं। पता नहीं कहां चला गया है। अगर कुछ होता तो टिप्पणी का बाप लग जाता। पेड़ लगाए अच्छी बात है। लगाए सेवा ही है ओ। उसका सद्भाव है, उसका व्यवहार है लगा है। गांव के लोगों के साथ समर्थन ले। गांव के लोगों के साथ बैठे। गांव के लोगों को बहकाया जा

रहा है। इसमें 15 से 20 प्रतिशत लोग गांव के है। बाकी जितने 80–85 परसेंट लोग बाहर के है। कई इंसान 100–150 पेज को लेकर बैठा है। एक ही इंसान। उस चीज को समझों। कब करोना में पैसा बांट दिया गया। पंच, सरपंच को ही पता है। आम जनता को पता ही नहीं है। सरपंच, पंच बताएगा कब बटा है। कब उसको सहयोग दिया है लोगों को। आम जनता को पता नहीं है। मेरे मोहल्ले में 20 घर है। 20 घर में एक लोगों को खड़ा करा दो, कोई भी बोल दे उनके द्वारा कुछ सुविधा मिला है। तो मैं गारंटी बोलता हूं पूरा समर्थन कर दूंगा पूरा का पूरा। और अपने मोहल्ले के एक एक लोगों का सिग्नेचर कराकर लाके दूंगा।

87. **श्री केदार प्रसाद पटेल, ग्राम–निरतू** :– उद्योग आने का एक ऐसे समय है। हमारे ग्राम के जो पढे–लिखे है, अशिक्षित के रूप में है, उनको भी यहां पर कार्य दे रहे है झा भैया जी। प्रदूषण तो है जरूर, यहां पर विशेष करके पौधा लगाया जाये। जिससे हमारी ग्राम को नुकसान न हो। किसान करते है तो दो रूपया कमाते है। जनता हमारे धान को बेचकर दो रूपया में खा लेते है। किसानी को कोई बाहरी चीज नहीं है। गांव वाले बोल रहे है कि नांगर चलाते रहो। रात दिन घर पर पड़े रहो। नौकर की तरह रात–दिन सेवा करते रहे। आगे बढ़ने का हमारे पास कोई प्रक्रिया नहीं है ऐसा सोचते है लोग। ये गलत है। इस उद्योग को हमारी समर्थन है।

88. **श्री अमर गुप्ता, पूर्व पार्षद, सकरी** :– हम समर्थन में आये हुए है। हम इंग्लैण्ड के नहीं है हम लोग यहीं सकरी के है। 10 किलोमीटर दूर, निरतू, घानापारा या घुटकू ये चार आपस में गांव नहीं चलता है। हमारे यहां भी इनके ही लोग जाते है, काम करते है। शहर जाते है। इनका ये कहना है यहीं सब कुछ इनको चाहिए। ऐसा कुछ नहीं है। यहां का जो जमीन दिया गया है सभी की उपेक्षा से दिया गया है। रोजगार जो पढ़े–लिखे हो, क्वालिटी हो, उनके हिसाब से दिया जायेगा न। बिना पढ़े–लिखे हो, रोजगार तो चाहेंगे नहीं। गांव के लोग ही शहर जाते है और शहर के लोग गांव आते है।

89. **श्रीमती कमला सूर्यवंशी, ग्राम–घानापारा** :– छत्तीसगढ राज्य को धान का कटोरा कहते है। आज धान काला–काला दिख रहा है, जो सोने की चिड़िया कहलाते है। भारत देश हम छत्तीसगढ़ का भी देश है। छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा इसलिए कहा जाता है। क्योंकि हम लोग अधिक से अधिक कृषि पर निर्भर करते है। आज बड़े–बड़े फैक्ट्री खोल लो। धान को सोने की चिड़िया कहते थे, आज

हम कोयले की चिडिया बोल रहे है। क्योंकि जितने पशु–पक्षी है सब काला ही काला दिखाई दे रहा है। खा रहे है ओ काला, पी रहे है ओ काला, यहां तक हम लोग भी रोड में आना जाना कर रहे है, तो भी काले काले दिख रहे है। जो सब चीज आप लोग बोल रहे हो रोजगार मिलेगा, रोजगार मिलेगा। क्या हम लोग सिर्फ कोयला फैक्ट्री में कमाने के लिए पैदा हुए है क्या बताओं, क्या हम लोगों को काम नहीं मिलेगा। पहले उद्योग नहीं आये थे तो हम नहीं जी खा रहे थे क्या, हमारे दादा परदादा लोग उनही लोग हमारे बच्चे का स्वास्थ्य अच्छा रहे, उनका जीवन–यापन अच्छा चले करके हम लोगों को शिक्षा दिये है। आज हम दो रूपया के खातिर इतना धरना क्यों दे रहे है, समर्थन दे रहे है, समर्थन दे रहे है। अपने आत्मा से पूछिये। आज हम रो रहे है। इतनी पीड़ित है, हम लोग बखान नहीं कर सकती। इतना बोलना चाहती हूं आप लोग नई बोल रहे है। पैसा दे रहे है तो आप लोगों से बोलवा रहे है। क्या वो नहीं चाहते, कि आप लोग का बच्चा अच्छा सा आगे बढ़े। अच्छा सा विकास कर सके। कोयला डिपो खुलेगा तो क्या फायदा है बताईयें। कुछ फायदा है क्या? वायु प्रदूषित हो रहा है जिसे हम सांस ले रहे है, नहा रहे है, वो प्रदूषित हो रहा है, ध्वनि प्रदूषित हो रहा है, बच्चे लोग अच्छा से विकास कर सके। तो कहां है भाई बताओं ना, जिसे हम लोगों को सुख–सुविधा मिल सके। आप लोग चंद दो रूपया के खातिर, क्या हम लोग हमारे खून में भारत माता का खून नहीं है क्या? तो मैं क्या संदेश देती देश को आगे बढ़ाने के लिए। हर बच्चों में है देश। हर त्यौहार में मनाया जाता है 15 अगस्त, 26 जनवरी में भारत माता की जय, वंदे मातरम करके। तो उसका भी तो मान रखना चाहिए। जो अधिकारी शासन प्रशासन है, ओ तो खुद बिके हुए है। मैं खुद बोल रही हूं क्योंकि मैं भी एक पंच हूं, हमें भी बोला गया है कि इतना लेलो और अपना मुंह बंद कर लो करके। हम लोगों को आवाज देना पड़ेगा, किसको ऊपर वाले को। उद्योग खुले तो हम लोगों को इतना मालूम नहीं था कि इतना डस्ट होगा। लेकिन आज तो मालूम हो गया है ना, कि कितना प्रभावित हैं जनसंख्या। कितने जीव जंतु प्रभावित, सब लोग प्रभावित हो रहे है, आज काटा है उसने भी कदम को बढ़ा रहे है तो हम कहेंगे की नहीं बताओं। आज काटा भी दिख रहा है क्योंकि चारों तरफ प्रदूषित है, प्रदूषित है। आज जहां पर पैर को रखेंगे काटा में तो चुभेगा की नहीं बताओं। इसलिए मेरे छोटे–बड़े सभी से मेरा अनुरोध है कि अपनी भारत माता को मिट्टी पहुंचाओं जो हमें बड़े बुजुर्ग ने दिये है। घर के मम्मी–पापा, बड़े बुजुर्ग ने यही शिक्षा दिये है कि बेटा सत्य के मार्ग पर जाना। असत्य के मार्ग पर मत जाना। आज हमारे गांव में सुबह से लेकर शाम तक तीन–तीन सौ रूपया, पांच–पांच सौ रूपया देंगे, चलो बोलना। क्या

दिल से बोल रहे हो। कल तो उन लोगों का धरना उनका दूसरा था आज कैसे बदल गये। क्यों बदल गये। हम लोग नहीं कमा सकेंगे क्या। अपने बच्चों को जीवन–यापन नहीं सकेंगे। यहीं उद्योग खोलेंगे, उसी में जाकर कमाऐंगे तभी अपना बच्चों का पालन पोषण कर सकेंगे। आज मानलो जनसंख्या 1500 तो दे देगें। हम लोगों के बच्चों 18 के उम्र हो रहे है। आज हम नौकरी कर रहे है। कल उनको कौन नौकरी देंगे। हम लोग को निकाल के फिर उसको देंगे। यही तो होगा ना। मेरा यहीं अनुरोध है बच्चों आप लोग तो नये पीढ़ी के बच्चें हो। आने वाला पीढ़ी भविष्य रहे। अच्छा सा उज्जवल जीवन रहे। अच्छा सा स्वस्थ्य वातावरण में जीये। आम नागरिक ही हूॅ मैं। कोई पदाधिकारी नहीं हूं। फिर भी से हम जितना कुछ भी पढ़ लिखे है। उसमें हम लोगों को कुछ जानकारी मिले। आज हम नहीं बिके है। क्या आज एक लाख दे देगें। मिट्टी के घर में जीवन–यापन करेंगे। उद्योग अच्छा है क्योंकि हमारे सब जरूरतमंद पूरा हो रहे है। लाईट के बिना एक मिनट नहीं रह सकते इंसान। जहां पर मानव जीवन व्यतीत करे, वहां पर उद्योग खोलना उचित है क्या? ये भी उचित नहीं है ना। पहले गांव–गांव में जाकर प्रचार किये थे क्या कि आप लोग के यहां फैक्ट्री खोलेंगे तो ये–ये नुकसान होंगे। ऐसा बोले थे क्या। सरपंच है, पंच है, गांव के जो भी मुखिया है जिसने भष्ट्राचार करके पैसा लेकर जनता को बुलाकर बोले थे क्या कि ऐसे ऐसे आप लोगों को कठिनाई का सामना करना पड़ेगा करके, नही तो बोले थे। स्कूल खोले, कॉलेज खोले। शिक्षा वाला जो भी है वो क्यों नहीं खोल रहे है। कोयला फैक्टी क्यों खोले। जिससे मानव जीवन पूरा दूषित होवे। मैं यहीं अनुरोध कर रही हूं कि शासन प्रशासन देश के नागरिक से मेरा अनुरोध है कि मेरे शब्द वाणी को ध्यान में रखते हुए दिल की गहराई में रखते हुए आप लोग प्रस्ताव रखिये कि हमारा जो भारत देश है, हमारा छत्तीसगढ़ है, घनापारा, घुटकू जो गांव है वो सुरक्षित रहे, स्वस्थ्य रहे।

90. **श्री ज्ञानेन्द्र देवांगन, तखतपुर** :– सबसे पहले मैं गांव वालो का विचार देखा। गांव वालों का विचार समर्थन और असमर्थन दोनों में था। समर्थन इस बात का रहा कि लोगों को रोजगार मिले, रोजगार मिले, पूरे परिवार को मिले, रोजगार के साथ सुरक्षा भी मिले। असमर्थन इस बात पर दिखा कि पर्यावरण से होने वाली जो तकलीफे है, समस्याएं है, इसको लेकर के असमर्थन दिखाई दिया। मैं माननीय पर्यावरण विभाग के जो भी अधिकरी आये है, कलेक्टर महोदया जो भी आएं है उनसे एक बार निवेदन करना चाहूंगा और अपने झा जी से निवेदन करना चाहूंगा कि सबसे पहले इस क्षेत्र में शिक्षा के लिए स्कुल खोलवाएं, यहां

बच्चों के लिए। स्वास्थ्य के लिए हॉस्पिटल खोलवाएं और 1000 कम से कम पेड़ लगवाएं। यहीं एक अनापत्ति नहीं होनी चाहिए। अगर आप तीनों चीजें खोलवा देते है तब आपका कोल वॉशरी खोलना बहुत अच्छा रहेगा।

91. **श्री राधेश्याम शर्मा, खरसिया, रायगढ़** :– ये जनमत संग्रह के प्रकिया है और इस प्रक्रिया में जो कार्यालयीन समय है ऑफिस टाईम है उस समय तक बैठना जरूरी है। यहां जनता की समय आयेगी, नहीं आयेगी, उसको आप निर्णय नहीं ले सकते। हो सकता है कई लोग चार बजे के बाद आये हो और वंचित रह गया हो। मेरे हिसाब से बाहर से जो आये वो बताये वहां जन सुनवाई समाप्त हो गई। ये लोकतंत्र में लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन है और पीठासीन अधिकारी महोदया की नियुक्ति नियमों के पालन कराने के लिए यहां की गई है, न कि नियम के उल्लंघन के लिए। कल दिनांक को यहां जनसुनवाई हुई वो कार्यालयीन अवधि के पूर्व समाप्त की गई है। तो वह पूर्णतः अवैध है और नियमों का घोर उल्लंघन है। आज विस्तार की जनसुनवाई के लिए फिर से सभा आहूत की गई है जनसुनवाई का अयोजन रखा गया है। मै जनता के सामने, पीठासीन अधिकारी महोदय के सामने जितने बिन्दु में बात रख चुका हूॅ। इस ढंग से गैर कानूनी जनसुनवाई को कराना और एक हठ धर्मिता के तहत् कंपनी को लाभ पहुंचाना ये बिल्कुल सर्वथा अनुचित है। मैं अभी भी पीठासीन महोदया से निवेदन करूंगा कि वो कानून और संविधान का परिपालन हेतु अभी भी अपनी गलतियों को सुधार ले। अभी भी वक्त है और जो जनसुनवाई की प्रक्रिया है वो मात्र एक दिन की नहीं है। अभी उनका रिपोर्ट भी उसमें जायेगा। हमारे देश में संवैधानिक जागरूकता के कमी के कारण अपना अभिमत शासकीय कर्मचारी दर्ज नहीं करते। आप लोग जब निर्वाचन प्रक्रिया होता है तो हमारे शासकीय कर्मचारी बैलेट से अपना मत देते है। ये अंतर्राष्ट्रीय विषय है। प्रदूषण जो है गंभीर मामला है पूरे जैव मण्डल में जिसको खतरा है। मनुष्य के जनजीवन से जुड़ा ये प्रश्न है। ऐसे मामले में क्या यहां उपस्थित पर्यावरण अधिकारी, अनुविभागीय अधिकारी, पुलिस के अधिकारी कर्मचारीगण और शासकीय जो भी कर्मचारी है। उनका नैतिक कर्तव्य और दायित्व बनता है कि वो भी अपना अभिमत देवे और अगर नहीं दे रहें है तो एक नागरिक के दायित्व का उल्लंघन कर रहे है। आज की जनसनुवाई प्रारंभ होने का समय है। ओ भी गलत है। कार्यालयीन समय माने जनसुनवाई का समय होता है वो कार्यालय के समय होता है कार्यालय का समय और जितने समय तक कार्यालय चलता है उतने समय तक आपको बैठे रहना है। पब्लिक आती है नहीं आती है इसका निर्धारण आप पहले से पूर्व से नहीं कर पायेंगे कि

यहां पब्लिक नहीं है इसलिए हम घर जा रहें है। मैं पीठासीन अधिकारी महोदय से पुनः सादर आग्रह करूंगा कि कल जो गलतियां हुई दबाव में हुई, डर में हुआ। जिस कारण से वो गलतियां अभी भी सुधारी जा सकती है। आज की कार्यवाही को आपको यही स्थगित कर देना चाहिए। इस जनसुनवाई को जो एक फर्जी ई.आई.ए. के आधार पर किया जा रहा है, उसको यही रद्द कर दिया जाना चाहिए। लेकिन मुझे लगता है हमारे पीठासीन अधिकारी महोदया शायद यह समझते है कि मैं देश की पहली ऐसा पीठासीन अधिकारी हूं जो जनसुनवाई निरस्त कर रही हूं। यहां छत्तीसगढ़ में तीन दर्जन से ऊपर जनसुनवाई को पीठासीन अधिकारी द्वारा निरस्त किया जा चुका है। आप अपने अंतरबुद्ध शक्तियों का इस्तेमाल क्यों नहीं करती। क्यों पुलिस बल का उपयोग हो रहा है। क्या पुलिस की ड्यूटी नहीं है। पुलिस के पास काम नहीं है। पुलिस प्रशासन को यहां कल के तारीख में जो लोग आये थे वो पक्ष में आये थे कि विपक्ष में आये थे। लेकिन पुलिस को अपना बल दिखाना पड़ा। पुलिस ने लाठीचार्ज नहीं किया लेकिन लाठी लहरानी पड़ी ऐसा क्यों। इस शांति पूर्वक माहौल में जहां जनमत संग्रह की प्रक्रिया है वहां पुलिस को ऐसी कार्य क्यों करना पड़ रहा है। क्या पुलिस को राज्य शासन का दबाव है। मुख्यमंत्री का दबाव है कि आपको अपने कंधों के जोर से इस उद्योगपति को लाभ दिलाने के लिए इस जनसुनवाई को कराना है और करवा करके हमको दिखाना है। मैंने जितनी बात रखी है सार्वजनिक तौर पर सोशल मीडिया, मीडिया में आती रही है। ये जो बात कहना पड़ रहा है कि ये बड़ा कानून का उल्लंघन का मामला है। इस अपराधिक प्रक्रिया में माननीय पीठासीन अधिकारी महोदया और मंच पर उपस्थित जितने भी अधिकारी है वो षडयंत्र करने, धोखाधड़ी करने, फर्जी कागजात को बनाने, उसे दुरूपयोग करने और कानून का उल्लंघन करने के अपराधी है। इस पर पुलिस के सक्षम अधिकारी को इस मंच से मैं कल बोल रहा था उसी समय संज्ञान लेना चाहिए था। आज शायद पुलिस अधिकारियों के ऊपर दबाव बना हो और ये जनसुनवाई और इसका एक दो परियोजना है जो चार वर्षों से संचालित है। मैं कल भी पीठासीन अधिकारी महोदया से निवेदन किया था, आज भी निवेदन कर रहा हूं जनसुनवाई के पश्चात इस कोल वॉशरी के परिक्षेत्र में बसे गांव है उनकी स्थिति को खुली आंखों से निरीक्षण करें और अपने टीप में अपने पत्र में जो कि उन्होंने कलेक्ट्रेट में हमने संपर्क किया पीठासीन अधिकारी महोदया उन्होंने अपनी बात कहा कि हम तो सिर्फ पत्र भेजने वाले है जो अभिमत आयेगा उसे भेजवाने के लिए। ऐसी कंपनी जो पूर्व में फर्जी दस्तावेज तैयार करती है। कन्सलटेंस से करवाती है और उसका उपयोग भी करती है जिसका डर हुआ। थाने में अपराध

पंजीबद्ध के लिए प्रथम सूचना प्रतिवेदन प्रेषित किया गया है और इसी कंपनी का एक उपक्रम की कल जनसुनवाई रायगढ़ जिले के घरघोड़ा में होना है। जनसुनवाई की प्रक्रिया में सबसे अहम बिंदु है उसकी समयसीमा। 14 सितंबर, 2006 के अधिसूचना के अंतर्गत जनसुनवाई कराने की जो प्रक्रिया है और जो अवधि है वो समाप्त हो चुकी है। राज्य सरकार को प्रबंधन का जो आवेदन जाता है, उसके 45 दिनों तक उसके अंदर ही राज्य शासन को, जिला प्रशासन को जनसुनवाई करवाने का अधिकार है। उसके पश्चात करवाती वो पूर्णतः अवैधानिक है गैरकानूनी है। उसके पश्चात केन्द्रीय प्रदूषण को पूरा अधिकार है कि नई कमेटी गठित कर उस जनसुनवाई को सम्पन्न कराये। तो फिर से राज्य सरकार के लोगों को उनके अधिकारियों को कमेटी में सदस्य नहीं बना सकते। वायु क्षेत्र में जो 10 किलोमीटर के रेडियस में जो गांव आता है। ग्राम पंचायत आता है उसको अधिसूचना का नोटिफिकेशन और ई.आई.ए. का अवलोकन उपलब्ध नहीं हुआ है। यहां तक की 10 किलोमीटर के परिक्षेत्र में निगम क्षेत्र है। बिलासपुर निगम क्षेत्र में चुने हुए जो जनप्रतिनिधि है उनको जिला प्रशासन ने सुनियोजित षडयंत्र के तहत् इस जनसुनवाई से अवगत नहीं करवाया है। आज की जो जनसुनाई है जो 14 सितंबर, 2006 के अधिसूचना के विपरीत है, उसके प्रावधानों के विपरीत है। केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के नियमों का उल्लंघन करने के लिए जनसुनवाई कराया जा रहा है और बार–बार जिला प्रशासन के अधिकारियों से निवेदन करने के बाद भी ये जनसुनवाई नहीं रूकी है तो क्षेत्र के ग्रामीणों के पास अब न्यायालय जाने के सिवाय कोई रास्ता नहीं है। मैं इसमें आपत्ति दर्ज करता हूं। केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय इस कंपनी के ई.आई.ए. रिपोर्ट के जमीनी हकीकत को जांचने के लिए एक कमेटी गठित करें। जिला प्रशासन ने दरकिनार कर दिया है और कानून का उल्लंघन कर इस जनसुनवाई को करावाया जा रहा है और इस क्षेत्र के जनता से निवेदन करूंगा कि न्यायालय के शरण में जाएं। पुलिस के पास अपराध पंजीबद्ध कराएं, उन्हें इनकी गिरफ्तारी परिणाम तक ले जाएं ताकि आने वाले समय में ऐसे गैर कानूनी ढंग से जनसुनवाई न हो सके।

92. **श्री तीजराम लुनिया, ग्राम–घुटकू** :– जो पूर्व हमारे पूर्व वक्ता बात कर रहे थे हमारे स्थानीय नहीं है वो। हम लोगों का पूर्ण अधिकार है हम स्थानीय होके हम बात रख रकते है। कोल वॉशरी खुलने में मेरा सहयोग है।

93. **श्री राजेश देवांगन, सकरी** :– पूर्व वक्ता राधेश्याम शर्मा, रायगढ़ खरसिया से बिलांग करते है। जो इण्डस्ट्रीयल एरिया है रायगढ़ और कोरबा। छत्तीसगढ़ के इण्डस्ट्रीयल एरिया के नाम से जाना जाता है। खुद वहां के प्रतिनिधित्व करते है और यहां आकर कोल वॉशरी का विरोध कर रहे है। अपने जगह कोल वॉशरी का विरोध नहीं कर सकते। किसी प्लांट का विरोध नहीं कर सकते। यहां आकर ग्रामीणों को भड़काकर अपना उपस्थिति दर्ज कराना चाहते है। मैं उनको ये भी बताना चाहता ही आदरणीय शर्मा जी कि आप विरोध कर युवाओं का रोजगार छीन रहे हो। किसी के लिए अच्छा काम नहीं कर रहे है आप। सबसे पहले एक और अच्छी बात बताना चाहूंगा। एक भाई है, जो अपने आप को किसान बता रहा है। सहीं में ओ किसान है। उसे व्यक्तिगत भी जानता हूं वो बोले 1500–2000 रूपया पर डे कमाता हूँ। लेकिन आप कितना सहयोग किया लोगों का ये तो बताईए। आज के डेट में जितने भी पढ़े–लिखे युवा है न ओ लोग बाहर जाके नौकरी कर रहा है। कोई रायगढ़ में कर रहे है, कोई बैगलोर में कर रहे है, कोई पुणे में कर रहा है। कोल वॉशरी को खुलना चाहिए। यहां के स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा।

94. **श्री राकेश मिश्रा, ग्राम–घुटकू** :– कोल वॉशरी खुलना चाहिए। जिसका खेती खार नहीं है उसको काम मिलना ही चाहिए। इसमें किसी को कोई आपत्ति हो तो बोलो भाई। मेरे गांव में अच्छा काम चलना चाहिए। गरीब लोग सुखी जिंदगी बिताना चाहिए। इसमें किसी को आपत्ति हो तो बोलो भाई। मेरे गांव में अच्छा काम चलना चाहिए। मेरे को गार्ड का नौकरी मिलना चाहिए। पूरा सक्षम नहीं हूँ।

95. **श्री प्रकाश मधुकर, पंच, ग्राम–निरतू** :– हमारे यहां कोल वॉशरी खुलने वाला है यहां बहुत से जो गरीब लोग है उनको ध्यान देते है और हमारी रखरखाव करते है। मेरा यही कहना है कि कोल वॉशरी खुलना चाहिए।

96. **श्री बैजनाथ लूनिया, ग्राम–घुटकू :–** हम ही लाये है हम ही बसाये है। प्रदीप झा भैया साथ दे रहे है। कोल वॉशरी खुलना चाहिए। मुझे गार्ड का नौकरी चाहिए।

97. **श्री वैभव सिंह, एडवोकेट** :– जिनके पास बोलने के लिए कुछ नहीं होता, वो लोग हल्ला करते है। मेरी बात को सुनिये डब्ल्यू पीसी 293/2019 में इस कंपनी को पार्टी बनाया गया है। इस कंपनी के विरूद्ध माननीय उच्च न्यायालय में प्रकरण पेंडिंग है। उसके बाद भी माननीय न्यायालय के आदेश का अवमानना हुई है।

इसलिए इस डॉयरेक्टर के खिलाफ अवमानना पेंडिंग है और जो पूर्व में जिला कलेक्टर थे उनके खिलाफ भी अवमानना की पीटिशन न्यायालय में पेंडिंग है। आप सभी लोग चाहे (सीईसीबी) छत्तीसगढ़ इन्वायरमेंट कन्जरवेशन बोर्ड, रायपुर में है मंत्रालय में भी काम कर चुका हूं। ये इण्डस्ट्री बनेगी इसकी धूल आपको खानी है। इसका परिणाम आपको भुगतना है। डॉयरेक्टर साहब साफ जगह पे रहते है। सीईसीबी की जो ऑफिस है जाके देख लीजिए एक कूड़ा–कचरा रास्ते में भी सो सकते है इतनी साफ सड़क रहती है नया रायपुर में। यहां इण्डस्ट्री बनेगी, धूल आपको झेलना है, परिणाम आपको झेलनी है, आपके बच्चों को झेलना है, आपके मां–बाप को झेलना है। परिणाम आपके बच्चे, आपके मां–बाप को झेलना है और दूसरे लोगों को वो आपको प्रॉमिस करेंगे। एक और आपको बात बताना चाहूंगा मैं ई.आई.ए. रिपोर्ट जब बनती है तो बताना रहता है कि न्यायालय में प्रकरण लंबित है या नहीं। मैंने यहां पर अपनी आपत्ति भी फाईल की है। अपने क्लाइंट के थ्रू। इस कंपनी के डॉयरेक्टर ने लिखा है कि हमारे खिलाफ कोई भी प्रकरण पेंडिंग नहीं है। डब्ल्यू पीसी 283/2019 कंटेंट पिटीसन 224/2019 ये दो प्रकरण आपके सामने बता रहा हूं। नाम से बोलेंगे तो भी मिल जायेगा। मैं यही चाहूंगा कि आप खुद चीज देख रहे है। मेरी बात पे, उसकी बात पे, इसकी बात पें मत जाईयें। समर्थन कर रहे है उसके बात प मत जाईये और विरोध कर रहे है उसके बात पे मत जाईये। अपनी आंखों से देखिए सड़क का क्या हाल हुआ है फिर डिसाईड करिये।

98. **श्री विरेन्द्र सिंह परिहार, ग्राम–नेवरा** :– हम लोगों की जो गांव की स्थिति है, वो हम लोग समझ रहे है। रोजगार चाहिए हम लोगों को चाहिए। काम करना है हम लोग को चाहिए। अपने मतलब स्वार्थ के लिए बता रहे है कि विरूद्ध कंपनी में केस लगाया हुआ है। केस लगाने वाले इन्ही लोग है। ये आपसी मामला है। हम लोगों को चाहिए रोजगार। हमको मुद्दे की बात करना है। ये लोग भरोसा दिये है कि आने वाले समय में हम लोग को इतना पेड़ लगाके दिये है। हम खुद निरीक्षण किये है। इतना पेड़ लगा के दे रहे है। इतना रोजगार दे रहे है तो वो मिल रहा है और एक प्लांट खुलने से ज्यादा से ज्यादा रोजगार मिलेगा। उसका हम समर्थन करते है। हमारे यहां सुख–दुख में साथ दे रहे है। जहां शादी हो रहा है उसके यहां भईया आ रहा है। वह हमको दिख रहा है। गरीब का मदद कर रहा है। तीन–तीन तालाब खुदवा के दिये है और क्या चाहिए। अगर मदद नहीं करेगा तो उसके खिलाफ हम जायेंगे। इस लिए मैं समर्थन करता हूं।

99. पंडित मुकेश मिश्रा, ग्राम–घुटकू :– कर्म प्रधान है यहां। जब देखो आपत्ति है, आपत्ति नहीं है। ये क्या है। कुछ नई पूछए। एक रूपिया नई मिलय।

उपरोक्त वक्तव्यों के बाद अतिरिक्त कलेक्टर, जिला–बिलासपुर तथा क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा उपस्थित जन समुदाय से अपने विचार व्यक्त करने का अनुरोध किया गया। किंतु जब कोई भी व्यक्ति अपने विचार व्यक्त करने हेतु उपस्थित नहीं हुआ तब लगभग 3:10 बजे अतिरिक्त कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा लोक सुनवाई के दौरान आये विभिन्न मुद्दों के निराकरण हेतु परियोजना प्रस्तावक को आमंत्रित किया गया।

परियोजना प्रस्तावक की ओर से श्री राजेश ठाकुर मेसर्स फिल कोल बेनिफिकेशन प्राईवेट लिमिटेड, ग्राम–घुटकू, तहसील–तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) के द्वारा परियोजना के संबंध में लोक सुनवाई के दौरान उठाये गये मुख्य मुद्दों के निराकरण हेतु मौखिक रूप से उपस्थित जन समुदाय को अवगत कराया गया। लगभग 4:00 बजे अतिरिक्त कलेक्टर, जिला–बिलासपुर द्वारा लोकसुनवाई सम्पन्न होने की घोषणा की गई।

लोकसुनवाई स्थल पर लिखित में 416 आवेदन पत्र सुझाव/विचार/टीका –टिप्पणी प्राप्त हुई। स्थल पर उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को आवेदक से परियोजना पर सूचना/स्पष्टीकरण प्राप्त करने का अवसर दिया गया। लोक सुनवाई के दौरान 99 व्यक्तियों के द्वारा मौखिक सुझाव/विचार/टीका–टिप्पणी एवं आपत्तियां अभिव्यक्त की गई, जिसे अभिलिखित किया गया। लोक सुनवाई में लगभग 450 व्यक्ति उपस्थित थे। उपस्थिति पत्रक पर कुल 48 व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षर किया गया। आयोजित लोक सुनवाई की वीडियोग्राफी एवं फोटोग्राफी कराई गई।

क्षेत्रीय अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय,
छ.ग. पर्यावरण संरक्षण मंडल,
बिलासपुर (छ.ग.)

अतिरिक्त कलेक्टर,
कार्यालय कलेक्टर,
जिला–बिलासपुर (छ.ग.)